मासिक

गुरमत ज्ञान

ISSN 2394-8485

३/-

सावन-भादों संवत् नानकशाही ५५६ अगस्त 2024 वर्ष १७ अंक १२

गुरुद्वारा श्री रामसर साहिब, श्री अमृतसर साहिब

भाई महाराज सिंघ

भाई महाराज सिंघ (निहाल सिंघ) ने सन् १८४५ में अंग्रेज़ों के विरुद्ध सर्वप्रथम विद्रोह की लहर खड़ी की। आपकी लहर महाराजा रणजीत सिंघ के निधन के पश्चात् अंग्रेज़ों से आज़ादी हासिल करने के लिए सर्वप्रथम लहर थी। आपकी सारी जायदाद अंग्रेज़ों ने ज़ब्त कर ली थी। आप उम्र भर अंग्रेज़ों के विरुद्ध आज़ादी के लिए संघर्षरत् रहे।

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक
गुरमत ज्ञान

सावन-भादों संवत् नानकशाही 556
वर्ष 17 अंक 12 अगस्त 2024

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 5

भाई महाराज सिंघ रब्बों :.... 8
-डॉ. कशमीर सिंघ नूर

अरदास 13
-डॉ. तारन सिंघ (दिवंगत)

गुरसिक्ख की चढ़दी कला का आधार है : सहजावस्था 19
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ

गुरबाणी में ज्ञान 26
-डॉ. तेजिंदर पाल सिंघ

मति विचि रतन जवाहर माणिक... 36
-डॉ. मनजीत कौर

१५ अगस्त १९४७ ई.— आज़ादी की सुबह 41
- स. गुरचरनजीत सिंघ लांबा

महान सिक्ख लेखक : महाकवि भाई संतोख सिंघ (कविता) 45
-स. करनैल सिंघ सरदार पंछी

खबरनामा 47

गुरबाणी विचार

भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥
लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥
जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥
पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥
छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥
हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥
जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥
नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥
से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥७ ॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में भादों महीने के प्राकृतिक अथवा भूमंडलीय वातावरण के प्रसंग में प्रभु-नाम से बिछड़े मनुष्य-मात्र की विवशता की स्थिति एवं अमूल्य मानव जीवन को व्यर्थ गंवाने के रुझान को गलत बताते हुए इस जीवन रूपी अवसर में प्रभु-नाम का सहारा लेने के लिए मार्गदर्शन करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जैसे भादों के महीने में मनुष्य बहुत घबरा जाता है (क्योंकि गर्मी के मौसम में बरसात के कारण हवा में नमी ज्यादा हो जाने से हुंमस हो जाती है), वैसे ही प्रभु मालिक के अतिरिक्त अन्य सांसारिक पदार्थों से मोह-लगाव होने से घबरा जाना स्वाभाविक है। भादों के महीने में जैसे कोई स्त्री लाख शृंगार करे तब भी वह व्यर्थ ही जाता है, इसी प्रकार मनुष्य-मात्र द्वारा धारण की जाने वाली बाहरी सजावट किसी काम नहीं आती अर्थात् जीवन की सफलता अर्थपूर्ण कार्य करने में है।

मृत्यु का दृष्टांत देते हुए सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जिस दिन यह शरीर खत्म हो गया तब तुझे प्रेत कहा या समझा जाएगा। यम के दूत तुझे लेकर चल पड़ेंगे और अन्य किसी को इसका पता नहीं चलने देंगे। जब शरीर में से प्राण निकल गये तब क्षण भर में तेरे परिवार वाले तुझे छोड़ देंगे, जिनसे तूने अत्यंत लगाव बना रखा है। तब तू हाथ मलेगा। तेरा शरीर कठिन स्थिति में होगा। घबराहट से तेरा रंग काले से सफेद हो जाएगा। जैसा कोई बोता है, वैसा ही काटता है। यह मातलोक, यह धरती, यह जीवन कर्म किये जाने योग्य खेत ही तो है।

गुरु जी अंत में मार्ग बख्शिश करते हुए फरमान करते हैं कि हे नानक! जो मनुष्य प्रभु की शरण में आ जाते हैं प्रभु उनको नाम रूपी जहाज में बिठा लेते हैं। वे भादों महीने की नरक तुल्य स्थिति से गुरु के साथ स्थापित संबंध के कारण बच जाते हैं।

संपादकीय

देश की आज़ादी में सिक्खों का योगदान

भारतवासियों ने हज़ारों वर्ष सामाजिक, आर्थिक, सभ्याचारक तथा धार्मिक गुलामी का बोझ ढोया। गुलामी का आरंभ उस समय हो गया था जब समाज को चार वर्णों में बांटा गया था। बंटा हुआ समाज कभी भी खुशियों का आनंद नहीं उठा सकता। वर्ण-विभाजन के समर्थक चाहे आज भी इसको 'आदर्श कर्म-व्यवसाय-विभाजन' कहकर इसकी प्रौढ़ता करते हैं किंतु गहनता से देखने से यह भली-भांति नज़र आ जाता है कि इसके अधीन चौथे वर्ग (तथाकथित) शूद्र की हालत इतनी बुरी थी कि वह अन्य तीन वर्गों का गुलाम-मात्र ही था। भारतवासियों की इसी अंदरूनी गुलामी ने विदेशी हमलावरों को भारत पर कब्ज़ा करने में कोई कठिनाई पेश न आने दी। एक-दूसरे को गुलाम बनाते-बनाते सभी भारतवासी खुद ही विदेशी गुलामी के गहरे कूप में जा गिरे। विदेशी हाकिमों ने हमलावर बनकर भारतवासियों को बड़ी बेरहमी से मारा, उजाड़ा, लूटा व पीटा। वे यहां से बेशुमार दौलत लूटकर अपने देश में ले जाते, भारत की बहू-बेटियों को अपने देश में मंडी लगाकर बेचते। भारतवासियों ने ऐसे विदेशी हाकिमों की गुलामी को अपनी तकदीर ही मान लिया। धीरे-धीरे गुलामी की जंजीरों में जकड़े भारतवासियों की हालत बद से बदतर होती चली गई। कठोरता का दौर और तेज होता गया। भारतवासियों को उनके मानवीय मौलिक अधिकारों से लगभग वंचित ही कर दिया गया। इनसे इज्जत से जीने के सभी अधिकार छीन लिए गए। भारतवासियों के सिर पर पगड़ी बांधने, पालकी में तथा घोड़े पर बैठने आदि पर भी पाबंदी लगा दी गई। यहां तक कि इनको अपना धर्म निभाने के लिए भी कई तरह के कर (ज़जिया) अदा करने पड़ते थे। ये पाबंदियां दिन-ब-दिन इतनी सख़्त होती जा रही थीं कि लोग अपना मत छोड़कर इसलाम धर्म धारण करने के लिए मज़बूर हो रहे थे।

लगभग डेढ़ हज़ार वर्ष की गुलामी के बाद इस देश के लोगों को आज़ादी का सुख प्राप्त हुआ। असल में आज़ादी की लड़ाई श्री गुरु नानक देव जी ने आरंभ की थी। प्रसिद्ध शायर इकबाल ने इस हकीकी सच को अपनी रचना में बयान करते हुए बड़े भावपूर्ण शब्दों में कहा है कि "फिर उठी आखिर सदाअ, तौहीद की पंजाब से। हिंद को इक मर्द-ए-कामिल ने, जगाया ख्वाब से।" श्री गुरु नानक देव जी ने उस समय के रजवाड़ों के विरुद्ध ज़ोरदार आवाज़ बुलंद

करते हुए कहा था कि "राजे सीह मुकदम कुते ॥ जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥" श्री गुरु नानक देव जी ने भक्त रविदास जी, भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी, भक्त शेख फरीद जी की आवाज़ को भी बुलंद किया तथा उनके द्वारा उच्चरित समाज का मार्गदर्शन करने वाली बाणी को एकत्र कर द्वितीय गुरु साहिब को विरासत के तौर पर सौंप दिया। श्री गुरु अरजन देव जी ने शांतमयी ढंग से जुल्म का मुकाबला करते हुए लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उन्होंने पूर्व गुरु साहिबान द्वारा उच्चरित एवं एकत्रित बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में संपादित कर मनुष्य-मात्र को इससे ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। ज़ालिम हुकूमत ने उनको हद दर्जे की यातनायें देकर शहीद कर दिया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने आज़ादी की लड़ाई को आगे बढ़ाते हुए जनता में आध्यात्मिकता के साथ-साथ राजनीतिक शक्ति पैदा करने के लिए 'मीरी-पीरी का सिद्धांत' कायम किया; समय की सरकार के साथ टक्कर लेते हुए अनेक युद्ध किए। इन सभी युद्धों का उद्देश्य जनसाधारण को अपनी आज़ाद हस्ती के अस्तित्व का एहसास कराना था । नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब के समय तो हालात इतने बिगड़ गए थे कि हर किसी को धर्म परिवर्तित किये जाने को विवश किया जाने लगा। अपने-अपने धर्म में जीने की आज़ादी की लड़ाई लड़ते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब को दिल्ली के चांदनी चौक में अपने प्रमुख सिक्खों सहित शहादत देनी पड़ी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की सृजना कर आज़ादी की लड़ाई को और मज़बूत किया। खालसे ने हर जुल्म का डटकर मुकाबला किया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने आशीर्वाद देकर अपने प्रमुख सिक्खों के साथ पंजाब की धरती को ज़ालिम शासन से आज़ाद करवाने के लिए भेजा था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने ज़ालिमों को सबक सिखाकर पंजाब की धरती पर पहली बार आज़ाद सत्ता स्थापित की। हमलावर चाहे फिर भी भारतवासियों को लूटने की मंशा से आते रहे किंतु पंजाब के शूरवीरों से मुंह की खाकर वापिस मुड़ते रहे । बारह मिसलों के खालसाई राज्य तथा सुरक्षा प्रबंध ने आज़ादी की अलख जगा दी थी, जिसकी बदौलत देशवासियों का अपना राज्य 'सिक्ख राज्य' स्थापित हुआ था। इस सब कुछ का आधार श्री गुरु नानक देव जी तथा अन्य गुरु साहिबान द्वारा प्रदान किया हुआ गुरमति फ़लसफ़ा ही था ।

तत्पश्चात अंग्रेजों की आमद हुई और उन्होंने भारत पर अपना शासन जमाना शुरू कर दिया था। यहां यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि पंजाबवासियों ने दूसरों के मुकाबले बहुत कम

समय गुलामी को सहन किया। मुगलों के बाद देश-कौम की आज़ादी छीनने वाली दुनिया की सबसे चालाक मानी जाती कौम अंग्रेज ही थी । अंग्रेजों से भारत को आज़ाद करवाने के लिए जिन देशवासियों ने संघर्ष की आधारशिला रखी, उसकी दासतान पंजाबियों, खासकर नानक-नाम-लेवा सिक्खों के वर्णन के बिना अधूरी है। सरदार शाम सिंघ अटारी, महारानी ज़िंदां, बाबा बीर सिंघ नौरंगाबादी, भाई महिराज सिंघ का योगदान एवं कुर्बानी उल्लेखनीय है । अंग्रेजों के विरुद्ध असहयोग लहर सबसे पहले सिक्खों ने ही चलायी। जनरल मोहन सिंघ आज़ाद हिंद फौज के बुनियादी संस्थापकों में से एक उल्लेखनीय सिक्ख शख़्सियत हैं । बहुत ही कम संख्या में होने के बावजूद भी सिक्खों की कुर्बानियों की प्रतिशतता को देखकर इतिहासकार वाह-वाह कर उठते हैं । अंग्रेज साम्राज्यवादियों द्वारा छीने गए सर्वकल्याणकारी खालसा राज्य को पुनः स्थापित करने के लिए यथासंभव प्रयास किए गए। चाहे इन प्रयासों का तत्काल कोई फल प्राप्त नहीं हुआ था मगर इन प्रयासों के लिए जो इतिहास सृजित किया गया वो आने वाले स्वतंत्रता संग्रामियों के लिए अवश्य प्रेरणास्रोत सिद्ध हुआ। पंजाब-निवासी नानक-नाम-लेवा सिक्खों ने देश को आज़ाद करवाकर ही दम लिया और इनको इसका आज़ादी वाले दिन भारी हर्जाना भी भुगतना पड़ा। जब १५ अगस्त, १९४७ ई. को सारा देश आज़ादी का जश्न मना रहा था, उस समय पंजाब-निवासी अपने जान से प्यारे पंजाब के हुए टुकड़ों का दुख अपने नग्न तन पर झेल रहे थे। उनको उनके जान से प्यारे गुरुद्वारा साहिबान से बिछोड़ा जा रहा था। वे कत्लोगारत का शिकार होकर अपने परिवारों से बिछड़ रहे थे, घर से बेघर होकर अपने परिवारों के लिए सुरक्षित जगह ढूंढ रहे थे।

आज़ादी के बाद कुछ समय व्यतीत होने पर सिक्खों द्वारा दी कुर्बानियों को भुलाकर इनको दूसरे दर्जे के शहरी होने का एहसास करवाने के लिए कृतघ्नता वाली प्रक्रिया शुरू कर दी गई। हक-सच की लड़ाई आज भी सिक्खों द्वारा जारी है और ये शांतमयी ढंग से देश की मुख्य धारा से जुड़े रहकर अपना रोष प्रकट करते आ रहे हैं। राज्य-गद्दी का सुख भोग रहे सियासतदानों को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि वे सिक्खों द्वारा अपनी जानें वारकर हासिल की गई कीमती आज़ादी के कारण ही आज राज्य-सत्ता का आनंद उठा रहे हैं। आओ! अपने शहीदों के प्रति अपनी श्रद्धा का इज़हार करते हुए उन्हें पूर्ण सम्मान प्रदान करें! उनके पद-चिन्हों पर चलते हुए हमेशा हक-सच की आवाज़ बुलंद करते रहें !!

भाई महाराज सिंघ रब्बों : स्वाधीनता संग्राम के प्रथम सिक्ख शहीद

*-डॉ. कशमीर सिंघ नूर**

सिक्ख धर्म के मतानुसार शहीद व्यक्ति मानम जाति के धार्मिक आदर्शों, सद्‌भावना की रक्षा, सच्चाई, न्याय, नैतिक मूल्यों की रक्षा हेतु तथा अन्याय, धक्केशाही, असमानता, राजनीतिक दमन के विरुद्ध अपना विरोध व रोष प्रकट करते हुए कुर्बानी देता है। शहीद व्यक्ति में सब्र एवं सिदक (भरोसा) जैसे गुण होते हैं। शहीद में भ्रम व भय जैसे अवगुण ढूंढने से भी नहीं मिलते। भाई गुरदास जी का कथन है :

साबरु सिदकि सहीदु भरम भउ खोवणा।

(वार ३:१८)

शब्द 'सिदक' से दृढ़ विश्वास एवं सहिष्णुता के भाव का भी बोध होता है और एक अहद (अकीदे) का भी। ये सब अमूल्य गुण स्वाधीनता संग्राम के प्रथम सिक्ख शहीद भाई महाराज सिंघ रब्बों में कूट-कूट कर भरे थे। उनमें आत्मिक बल, साहस, सहनशीलता की कोई कमी नहीं थी।

भाई महाराज सिंघ रब्बों का जन्म 'निहाल सिंघ' के रूप में रब्बों उच्ची (राबू, नगर मलौद, वर्तमान लुधियाना जिला में स्थित) में १८वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ था। भाई महाराज सिंघ के अन्य दो भाई भी थे। एक का नाम स. गुरदयाल सिंघ था तथा दूसरे भाई का नाम स. गुरबखश सिंघ था।

भाई महाराज सिंघ उर्फ भाई निहाल सिंघ बचपन से ही धैर्यवान व धार्मिक प्रवृत्ति के मालिक थे। उनके पिता जी उन्हें गुरबाणी और गुरमुखी (पंजाबी) की शिक्षा व ज्ञान-प्राप्ति हेतु एक सिक्ख धर्मशाला में भेजते थे। वहां के शिक्षक ने उनकी रुचि देखकर उनके पिता जी को सलाह दी थी कि बालक को भाई तोता सिंघ ठीकरीवाला के डेरे में भेज दिया जाए।

अपने प्रारंभिक वर्षों के दौरान भाई महाराज सिंघ ने भाई तोता सिंघ के डेरे ठीकरीवाला में मन लगाकर समर्पण-भाव से शिक्षा प्राप्त की। उस डेरे में उन्होंने सिक्ख इतिहास, श्री गुरु ग्रंथ साहिब और सिक्ख-दर्शन अर्थात् पारंपरिक सिक्ख मर्यादा, राजनीति-दर्शन आदि के बारे में शिक्षा प्राप्त की, अपने ज्ञान में बढ़ोतरी की। उस समय के ज्यादातर सिक्ख डेरों आदि से ही गुरमति विद्या हासिल किया करते थे। प्राचीन डेरे वर्तमान समय के कई डेरों की तरह देहधारी गुरु-परंपरा यानि व्यक्ति-पूजा को बढ़ावा नहीं देते थे। धन इकट्ठा करना उनका ध्येय नहीं था और न ही वे अंधविश्वास, भ्रम आदि फैलाते थे। उस युग के

*बी-एक्स-१२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९१०

डेरे अपनी महान शैक्षिक पद्धतियों के माध्यम से सिक्ख संत-योद्धाओं भाव संत-सिपाहियों का निर्माण किया करते थे। कुछ ऐतिहासिक स्रोत बताते हैं कि भाई महाराज सिंघ ने उस डेरे में (भाई तोता सिंघ ठीकरीवाला के डेरे में) अमृत-पान किया और वे पूर्ण रूप से सिंघ सज गए। उन्होंने सिक्ख परंपराओं, सिक्ख इतिहास तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब का अध्ययन तो किया ही, साथ ही उन्होंने वेदों का भी अवलोकन किया।

कहा जाता है कि जब भाई तोता सिंघ के डेरे में वे छात्र के रूप में रहते थे, तो उस समय एक अन्य गुरसिक्ख भाई बीर सिंघ नौरंगाबादी की शख्सियत ने भी उन्हें प्रभावित किया। भाई बीर सिंघ गुरबाणी की कथा-व्याख्या द्वारा लोगों को निहाल किया करते थे। ऐसे ही एक धार्मिक कथा-आयोजन में भाई महाराज सिंघ भी उपस्थित थे। वे भाई बीर सिंघ नौरंगाबादी के प्रवचनों से इतना प्रभावित हुए कि वे उनके डेरे में रहने लगे।

डेरे में उनका समय संगत की सेवा करने में व्यतीत होने लगा। हज़ारों श्रद्धालु उस डेरे में आते थे। भाई महाराज सिंघ सभी लोगों को लंगर छकाने की जिम्मेदारी अन्य सेवादारों की मदद से बाखूबी निभाने लगे। अमृत-पान करने के बाद उनका नाम बदलकर भाई भगवान सिंघ रखा गया था। वे अपनी विनम्रता, सेवा तथा समर्पण-भावना के कारण भाई बीर सिंघ के सबसे लायक एवं भरोसेमंद शिष्यों में से एक बन गए थे।

वे 'महाराज सिंघ' के रूप में क्यों प्रसिद्ध हुए, इसकी एक पृष्ठभूमि है। वे लंगर बांटने के समय पंगत में बैठे लोगों को प्राय: कहा करते थे, "लीजिए महाराज! और परशादा लीजिए! महाराज! और दाल-सब्जी लीजिए!!" उनकी विनम्रता भरी इस आदत के कारण लोगों ने उन्हें 'भाई महाराज सिंघ' नाम से पुकारना शुरू कर दिया। अंतत: उनके दो पूर्व नाम 'निहाल सिंघ' एवं 'भगवान सिंघ' भुला दिए गए और उन्हें केवल 'भाई महाराज सिंघ' नाम से जाना जाने लगा।

उन्होंने नौरंगाबाद डेरे में मीरी-पीरी के उच्च सिद्धांतों व आदर्शों के बारे में भी ज्ञान प्राप्त किया। उन्हें निजी रूप से भाई बीर सिंघ द्वारा मार्गदर्शन दिया गया। उन्होंने अपने मार्गदर्शक की खूब मन लगाकर सेवा की और उनकी प्रत्येक आज्ञा का पालन किया।

बाद में भाई बीर सिंघ ने उन्हें श्री अमृतसर साहिब भेज दिया। यहां पर उन्होंने 'समदू का तालाब' नामक स्थान पर सिक्ख धर्म व गुरबाणी के प्रचार-प्रसार हेतु संचालन-केंद्र (डेरा) स्थापित किया। यहां पर उनके साथ भाई राम सिंघ (जो बाद में नामधारी संप्रदाय के संस्थापक बने) कार्य (सेवा) करने लगे। वे दोनों मिलकर पंजाब की धरती पर यात्रा करते और सिक्ख-संप्रभुता की दुर्दशा तथा इसे खो देने के खतरे के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करते। वे सिक्ख साम्राज्य के भविष्य की रक्षा करना चाहते थे, जो कि एक अनिश्चित-सी स्थिति में पहुंच चुका था।

लाहौर दरबार के गद्दार व बागी गुट— डोगरा

गुट के नेतृत्व में भाई बीर सिंघ के डेरे पर ७ मई, १८४४ ई. को हमला हो गया और इस हमले में भाई बीर सिंघ शहीद हो गए। भाई महाराज सिंघ की उच्च प्रतिष्ठा के कारण उन्हें डेरे के संचालन की जिम्मेदारी सौंप दी गई। इतिहासकार स. अमरदीप सिंघ मंदरा का तर्क है कि इस हमले में अपने वरिष्ठ की कुर्बानी ने भाई महाराज सिंघ के जीवन में क्रांति पैदा की तथा उन लोगों (शक्तियों) का मुकाबला करने के लिए प्रेरित किया, जिनसे सिक्ख (खालसा) राज्य के अस्तित्व को खतरा था। लाहौर दरबार के वफादार एवं ईमानदार सिक्ख प्रमुख तथा दरबारी लोग भाई महाराज सिंघ का हृदय से सम्मान करते थे।

यह अति गर्व की बात थी कि १८४० ई. के दशक तक सिक्ख साम्राज्य सही अर्थों में भारत का एक स्वतंत्र राज्य बना रहा। शेष भारत यूरोपीय शक्तियों द्वारा उपनिवेशित कर लिया गया था। भाई महाराज सिंघ को प्रथम उल्लेखनीय भारतीय माना जाता है, जिन्होंने औपनिवेशिक ब्रिटिश प्रतिष्ठान का प्रतिरोध किया। वे कुछ सिक्खों में से एक थे, जो १८४० ई. के दशक की शुरूआत में सिक्ख राज्य के लिए अंग्रेज़ों द्वारा उत्पन्न खतरे तथा उपनिवेशीकरण के ज़ोखिम को समझते थे। उनका विचार सही सिद्ध हुआ और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा सिक्ख साम्राज्य के पूर्ण विलय से ठीक पहले उनकी विद्रोही गतिविधियां १८४६ ई. में प्रथम एंग्लो सिक्ख युद्ध के बाद शुरू हो गईं।

उन्होंने महाराजा रणजीत सिंघ की विधवा महारानी जिंद कौर के साथ संपर्क बनाए रखा और कठिन समय में महारानी की मदद भी की। सन् १८४७ ई. में अंग्रेज़ों ने महारानी जिंद कौर को पंजाब से बाहर भेजने का फैसला किया और उनके प्रभाव को खत्म करने का प्रयास किया। इस खबर के परिणामस्वरूप भाई महाराज सिंघ 'प्रेमा साज़िश' में शामिल हो गए। इस साजिश केस में भाई प्रेमा तथा उसका भाई, भाई मोहरा दो प्रमुख शख्सियतें थीं। इस साजिश के अंतर्गत २१ अप्रैल, १८४७ ई. को अंग्रेज रेज़िडेंट हेनरी लॉरेंस और अंग्रेजों के चाटुकार सिक्ख सरदारों को शालामार बाग (श्री अमृतसर साहिब) में होने वाली सभा में शामिल होने पर कत्ल करने की घटना को अंज़ाम देना था। भाई महाराज सिंघ ने इस उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु भाई प्रेमा को एक तलवार भेंट की और उसे अपना आशीर्वाद प्रदान किया। घटना घटित होने के तीन सप्ताह पूर्व सरकार को इस साजिश का पता चल गया तथा पुलिस साज़िशकर्त्ताओं को गिरफ्तार करने के लिए सक्रिय हो गई। सरकार हर हाल में भाई महाराज सिंघ को गिरफ्तार करना चाहती थी, परंतु वे सरकार के हाथ न लगे। उनके कई निजी सेवकों को गिरफ्तार कर उनसे भाई जी के बारे में जानकारी हासिल करने की कोशिश की गई, लेकिन किसी ने कुछ नहीं बताया। अंततः सरकार ने रूपोश भाई महाराज सिंघ के विरुद्ध एक आदेश जारी कर दिया कि वे श्री अमृतसर साहिब छोड़ वापस नौरंगाबाद चले जाएं और

कौंसिल के समक्ष पेश हो जाएं। उन्होंने सरकार के इस आदेश को मानने से साफ इनकार कर दिया। इस पर सरकार ने २५ जून, १८४७ ई. को उनकी जायदाद आम नीलामी के माध्यम से बेच दी तथा उनकी गिरफ्तारी के लिए एक हज़ार रुपए का इनाम घोषित कर दिया। बाद में यह इनाम राशि बढ़ाकर दस हज़ार रुपए कर दी गई।

प्रेमा साज़िश केस में उनकी भूमिका के बारे में लोगों के बीच चर्चा होने के बाद पंजाब में उनकी लोकप्रियता काफी बढ़ गई थी। सरदार शेर सिंघ अटारीवाला तथा अन्य सिक्ख नेता जब भी सिक्खों को विद्रोही गतिविधियों में शामिल होने हेतु प्रेरित करते, तभी वे भाई महाराज सिंघ रब्बों का उदाहरण दिया करते थे।

अंग्रेज़ों ने उनके स्वतंत्रता आंदोलन को नौरंगाबाद तक सीमित करने की कोशिश की। उधर भाई महाराज सिंघ ने अपने लगभग ६०० अनुयायियों के साथ सरकार के विरुद्ध गुप्त रूप से काम करना शुरू कर दिया। उन्होंने उस समय पंजाबी और सिक्ख समाज के विभिन्न वर्गों के बीच अंतर्सम्बंधों का एक विशाल जनसमूह बनाया।

जब भाई महाराज सिंघ को अप्रैल १८४८ ई. में मुलतान में दीवान मूलराज चोपड़ा द्वारा शुरू किए गए विद्रोह की खबर मिली, तो उन्होंने उसकी सहायता के लिए अपने ४०० घुड़सवारों की एक सेना के साथ मुलतान की ओर कूच किया, ताकि अंग्रेज़ों को सबक सिखाया जा सके, लेकिन कूटनीति व रणनीति को लेकर दोनों नेताओं के बीच मतभेद पैदा हो गए। इसके बाद भाई महाराज सिंघ जून, १८४८ ई. में छतर सिंघ अटारीवाला से मिलने और उनकी ब्रिटिश-विरोधी योजना को सुदृढ़ करने हेतु हजारा के लिए रवाना हो गए।

नवंबर १८४८ ई. में उन्होंने सरदार शेर सिंघ अटारीवाला के साथ रामनगर में द्वितीय एंग्लो-सिक्ख युद्ध में भाग लिया। उन्होंने इस युद्ध में एक काले घोड़े पर सवार होकर अपना युद्ध-कौशल दिखाया। सिक्ख सेना का मनोबल बढ़ाया और सभी लोगों से अपने देश की रक्षा हेतु अपनी जान की बाज़ी तक लगाने के लिए कहा। भाई जी तो चिलियांवाला और गुजरात के युद्धों में भी भागीदार थे।

उस समय के भारत के गवर्नर जनरल जेम्स ब्राउन रामसे उर्फ लॉर्ड डलहौजी को भी यह मानना पड़ा कि ये लड़ाइयां (चिलियांवाला एवं गुजरात) सिक्खों द्वारा सीधे तौर पर अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ी गई थीं। इसका उद्देश्य न केवल पंजाब, बल्कि पूरे भारतीय उपमहाद्वीप से अंग्रेज़ों के प्रभाव को खत्म करना था।

भाई महाराज सिंघ की प्रशंसा करते हुए हेनरी लॉरेंस ने लिखा है— ''भाई महाराज सिंघ एक प्रतिष्ठित और प्रभावशाली सिक्ख पुजारी (धार्मिक व्यक्ति) थे। वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने सन् १८४८ ई. में मुलतान की सीमा से परे अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह के झंडे फहराए। वे एकमात्र ऐसे नेता थे, जिन्होंने रावलपिंडी में सर वाल्टर गिल्बर्ट के सामने हथियार नहीं डाले थे।''

यह खेद व दुख की बात हुई कि गुजरात में हुई लड़ाई में सिक्ख हार गए और हारे हुए सरदार रावलपिंडी की ओर चले गए। वहां सिक्ख सरदारों की एक एकत्रता रावलपिंडी में हुई। उस समय भाई महाराज सिंघ ने उन्हें अंग्रेजों के विरुद्ध एक और युद्ध लड़ने को उत्साहित तथा प्रेरित किया। भाई महाराज सिंघ और उनके वफादार सिक्ख सैनिकों ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखने का हौसला दिखाया। वे अपना संघर्ष जारी रखने हेतु रियासत जम्मू-कशमीर की ओर चले गए तथा अपना मुख्य केंद्र 'देवी बटाला' बना लिया। कुछ समय बाद भाई महाराज सिंघ और भी सुरक्षित ठिकाने चंबी में चले गए। वहां उन्हें पता चला कि अंग्रेज़ महाराज दलीप सिंघ को जलावतन कर इंग्लैंड भेज रहे हैं। वे महाराजा दलीप सिंघ को जलावतनी से बचाने हेतु किसी भी तरह उन्हें जम्मू-कशमीर में लाना चाहते थे और उनके नाम पर अपने संघर्ष को जारी रखना चाहते थे। उस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होंने अपने अनुयायियों— कमांडर प्रेम सिंघ, रावल के राम सिंघ, सरहाली के बूटा सिंघ, जवाहर सिंघ, नौशहरा के महिताब सिंघ, भूप सिंघ, दल सिंघ का जत्था भेजा। लाहौर में मियाँ गणेशी ने मदद करनी थी। योजना पूरी होने से पहले ही इसकी गुप्त सूचना अंग्रेज सरकार को मिल गई। सरकार ने १८ नवंबर, १८४९ ई. को लाहौर में कुछ व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया। उसे पता चल चुका था कि इस योजना के पीछे भाई महाराज सिंघ का दिमाग काम कर रहा है। सरकार ने उनकी गिरफ्तारी हेतु गुप्तचर विभाग को चौकस कर दिया।

भारत की स्वतंत्रता हेतु जारी संघर्ष के दौरान भाई महाराज सिंघ अपने जांबाज़ वफादार साथियों के साथ ठौर-ठिकाना बदलते रहते थे। इसी प्रकार २८ दिसंबर, १८४९ ई. को रात्रि में जलंधर के आदमपुर में वे अपने साथियों सहित ईख (गन्ने) के एक खेत में पड़ाव डाले हुए थे कि किसी मुखबिर की सूचना पर जलंधर के उपायुक्त (डी. सी.) वैनिज़टार्ट ने पुलिस बल के साथ उस खेत को घेरे में ले लिया। इस समय वतनपरस्तों व कौमपरस्तों के पास कम मात्रा में गोला-बारूद था। कुछ देर की झड़प के बाद भाई महाराज सिंघ को उनके २१ साथियों सहित गिरफ्तार कर लिया गया। अपनी गिरफ्तारी से पूर्व उन्होंने अंग्रेज़ सरकार की नाक में दम किए रखा था। उनकी लोकप्रियता से डरी हुई हुकूमत उन्हें फांसी न दे सकी और उन्हें १४ मई, १८५० ई. को उनके निजी सेवक भाई खड़क सिंघ सहित मुहम्मदशाह नामक समुद्री जहाज में बैठाकर सिंगापुर भेज गिया। वहां उन्हें एक अंधेरी कोठड़ी में कैद कर रखा गया। उनकी आंखों की रौशनी कम होती गई तथा तीन वर्षों के बाद उन्हें दिखाई देना बंद हो गया। उनका स्वास्थ्य बिगड़ता चला गया। वे गठिया रोग से ग्रस्त हो गए। आखिर वे ५ जुलाई, १८५६ ई. को सिंगापुर में प्रभु-चरणों में जा बिराजमान हुए। स्वाधीनता संग्राम के इस पहले सिक्ख सेनानी को कोटि-कोटि नमन!

अरदास

-डॉ. तारन सिंघ (दिवंगत)

१. श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा उच्चरित 'ज़फ़रनामा' (फ़तहनामा) कमाल है, परन्तु 'अरदास' प्रत्येक ख़ालसा जी का 'ज़फ़रनामा' है। यह वाहिगुरु जी, भगौती जी, दस गुरु साहिबान तथा सरंबत्त पंथ का 'ज़फ़रनामा' है। यह ऐसा ज़फ़रनामा है, जिसका एक-एक अक्षर पहले व्यवहार में लाया गया और जिसकी एक-एक पंक्ति के लिए कई-कई बार एक-एक सदी कठिन साधना और सख्त संघर्ष करना पड़ा। जैसे कोई महान रचना कलाकार का जीवन-अंश भरपूर ख़ून होता है, उसी प्रकार अरदास में प्रत्येक ख़ालसा जी का लहू समाया हुआ है। संसार की किसी अन्य अरदास की रचना इतना संघर्षरत होकर नहीं की गई जितनी मेहनत कर यह रचना की गई है। फिर इसमें इतना सामर्थ्य आश्चर्य की ही बात है। शायद ही गद्य का इतना 'ज़ोरदार' कोई अन्य भाग विश्व-साहित्य में आया हो, जितना हमारे साहित्य का यह अंश है। शायद ही किसी साहित्यकार ने अपनी कौम का इतिहास चित्रित करने के लिए कम जगह ली हो, जितनी समूह ख़ालसा जी ने यह इतिहास चित्रित करने पर लगाई है। शायद ही किसी कौम की सभी आशायों को रूपमान करने के लिए किसी लेखक ने कभी इतने साहस का परिचय दिया हो, जितना ख़ालसा जी ने अपने आदर्श की ऊँची चोटियों को रूपमान करने के लिए अरदास में साहस दिखाया है। पद्य का विश्व-साहित्य में से यह अति उत्तम नमूना है। यह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, भाई मनी सिंघ जी और पंथ ख़ालसा जी की संयुक्त रचना, जिस रचना को संपूर्ण हुआ कभी नहीं कहा जाएगा, क्योंकि जैसे-जैसे ख़ालसा जी का इतिहास आगे बढ़ता जाएगा, उतने चिह्न यहाँ अति सूक्ष्म संकेतों में सदा दर्शाए जाते रहेंगे। यह सारी रचना स्मरणात्मक, चिन्हात्मक और संकेतात्मक है। यह कौम का गतिमान जीवन है। इस रचना की आख़िरी पंक्ति में 'पंथ' और 'नानक' एक हैं कि 'पंथ' ने 'नानक' नाम की मुहर इस्तेमाल की और पंथ को यह हक सदा प्राप्त है।

अरदास पंथ ख़ालसा जी की रची हुई महान रचना है, जिसे प्रत्येक साधारण,

विशेष, रस्मी और ग़ैररस्मी सिक्ख समागम में पूर्ण सम्मान सहित खड़े होकर पूर्ण गंभीरता व संजीदगी के साथ दोहराया जाता है। इसके नायकों को प्रतिदिन प्रणाम किया जाता है। प्रतिदिन पंथ के अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय करतबों का प्रण लिया जाता है। यह हमारा राष्ट्रीय गीत है। यह हमारा अंतर्राष्ट्रीय जीवन आदर्शों का एलान है। अपने शहीदों को हम रोज़ अभिनंदन (Guard Of Honour) करते हैं, उन्हें नमन करते हैं। कोई अन्य एलान या प्रण इतनी बार विश्व में नहीं दोहराया जाता जितनी बार यह एलान पढ़ा और दोहराया जाता है। हमें अपनी अरदास की अधिक से अधिक समझ होनी चाहिए। यहाँ इस दिशा की तरफ एक यत्न करते हैं। कुछ बातें अरदास में से विशेष ध्यान आकर्षित करती हैं।

२. फतह : ੴ वाहिगुरू जी की फतह।।

अरदास 'फ़तहनामा' है। अरदास में 'फतह' का इतिहास है और इसमें सदा फतह-प्राप्ति के लिए विनती है।'फतह' ੴ की होनी है, 'फतह' एकता की होनी है-- विश्व-एकता की, जिसके आवश्यक अंगों— देशों, कौमों, जातियों, भाषाओं, रंगों, दूरियों, समाजों के आर्थिक, राजसी, सांस्कृतिक, दार्शनिक, धार्मिक और सदाचारक झगड़ों से समूह संसार ने ऊपर उठना है। जब सारा प्रसार 'ੴ' का है, फिर भेदभाव, वैर और भय कहाँ? समूह ब्रह्मांड एक एकाग्रता है, चाहे बहिर्मुखी भिन्न-भेद कितने हैं। हमारी अरदास का आदर्श समूह ब्रह्मांड की एकाग्रता तक पहुँचना है। हमने 'निरभउ' और 'निरवैर' बनना है। फतह विश्व-एकता की होनी है। ख़ालसे ने इस आदर्श के लिए यत्न करते रहना है। यह 'ੴ' की 'फतह' अरदास है। 'ੴ' की 'फतह' का 'ज़फ़रनामा' है।

इस फतह-प्राप्ति का प्रमुख साधन भी 'ੴ' वाहिगुरू जी की फतह के मंत्र में बताया गया है। इस 'फतह' की प्राप्ति का मुख्य साधन ब्रह्मांड की सामूहिक सुंदरता विस्मयकारी ज्ञान है— वाहिगुरू। 'गुरू' 'ज्ञान' का सूचक है,'वाहि' विस्मय का, सुंदरता का। जब भी विश्व-एकता की 'फतह' होगी, 'ज्ञान' द्वारा होगी, तोपों-गोलियों के साथ नहीं होगी 'ज्ञान' 'ੴ' का अर्थात् समूह ब्रह्मांड 'एकता', 'ੴ' का प्रसार है। ज्ञान की चोटी यही है कि द्वैत कहीं पर नहीं, सब जगह एकाग्रता है, अद्वैत/ द्वैत और दिन-रात, सुंदर-कुरूप, नेकी-बदी, पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, ऊँच-नीच, अमीर-ग़रीब में भी कहीं नहीं है। सारा संसार 'नमो' (नमस्कार) कर रहा है।

नमो सूरज सूरजे नमो चंद्र चंद्रे ।।
नमो राज राजे नमो इंद्र इंद्रे ।।
नमो अंधकारे नमो तेज तेजे ।।
नमो ब्रिंद ब्रिंदे नमो बीज बीजे ।।१८५।।
नमो राजसं तामसं सांत रूपे ।।
नमो परम तत्तं अतत्तं सरूपे ।।
(श्री दसम ग्रंथ साहिब)

यह है 'ज्ञान'। इस ज्ञान में से संसार का राजसी, धार्मिक, सांस्कृतिक, कौमी, अद्वैत पैदा होना है। अत: 'फतह' एकता की है। यह 'फतह' ज्ञान की है। सारी अरदास इस एकता के लिए किये गए प्रयत्नों का इतिहास है। इस इतिहास का ख़ून भी अनेक बार बहेगा, मगर एकता और ज्ञान के लिए, भेदभाव और द्वैत के लिए कभी नहीं। भविष्य में भी ख़ून बहेगा, परन्तु 'एकता' के लिए, संसार को विखंडित करने के लिए नहीं। सिक्ख 'ੴ' के उपासक हैं। 'एकता' ही हमारा ब्रह्म है, ईश्वर है और परमात्मा है। हमारा बहा ख़ून, शहीदों का ख़ून, इस एकता की भेंट है।

३. सहायता : विश्व-एकता की प्राप्ति के लिए और इस प्राप्ति हेतु आवश्यक ज्ञान और बल के लिए ख़ालसा सहायक समझता है परमात्मा की सर्वव्यापक शक्ति (भगौती) को, जो सदैव काल सत्य का साथ देती है और असत्य का विनाश करती है। इस मंतव्य के लिए ख़ालसा सहायक समझता है अपने महान गुरु साहिबान की आत्मा को, जिन्होंने (भगौती) शक्ति का सहारा लेकर विश्व-एकता के लिए संघर्ष किया। प्रभु की सर्वव्यापक भगौती (शक्ति) और अमर गुरु-आत्मा का ख़ालसा 'सिमरन' करता है और उसकी आराधना करता है, ताकि उसे एकता के निश्चित उद्देश्य में सहायता प्राप्त हो। हमारा दृढ़ विश्वास है कि 'एकाग्रता' के विरोधियों का नाश होगा और 'एकाग्रता' की जय होगी। एकता की जय ही सत्य की जय है, क्योंकि सत्यता द्वैत में नहीं हो सकती।

ख़ालसा यह संघर्ष करता रहेगा, मगर वह कभी असत्य का शस्त्र इस्तेमाल नहीं करेगा, क्योंकि उसकी आस्था श्री गुरु ग्रंथ साहिब में है। उसे हर बात में ध्यान धरना है श्री गुरु ग्रंथ साहिब का, जो दस पातशाहियों की ज्योति है। ख़ालसा जी ने एकता के लिए संघर्ष उन सिद्धांतों व नियमों के दायरे में रह कर करना है, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दृढ़ करवाए गए हैं। रोज़ाना का हमारा जीवन इन नियमों के अधीन है, व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन। यही 'ध्यान धरना' है, यही श्री गुरु ग्रंथ साहिब की परिक्रमा करना है, ध्यान धर कर वाहिगुरु बोलना है। कहने से तात्पर्य, 'वाहिगुरु' हमारा

वह है जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बयान किया गया है, जो ''ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।'' है। इन आदर्शों के अधीन रह कर सिक्ख ने जीवन जीना है। एकता के लिए भी झूठ का प्रयोग नहीं किया जा सकता, 'वैर' और 'भय' देने का प्रयोग नहीं किया जा सकता। यह सत्य की लड़ाई है। इस लड़ाई में प्रभु (भगौती) और गुरु हमारे साथ हैं।

एकता के लिए सत्य के जीवन में प्रत्येक सिक्ख ने अपनी कमाई का हिस्सा डालना है। यह कमाई कई प्रकार की हो सकती है। अरदास में सिक्ख की कमाई के ये स्वरूप माने गए हैं। सिक्ख स्वरूपों में से एक या एक से अधिक कई स्वरूप अपने जीवन में अपना सकता है, वह स्वीकारयोग्य कमाई होगी।

(क) पाँच प्यारों वाली कमाई— गुरु या गुरु-पंथ की चुनौती आने पर तन, मन, धन कुर्बान करने के लिए तत्पर हो जाना।

(ख) चारों साहिबज़ादों की कमाई—

(१) अपने बच्चों को सत्य की लड़ाई के लिए कुर्बानी देने से मत रोकना।

(२) सत्य के लिए हुकूमत के जब्र-ज़ुल्म और अत्याचार से मत घबराना।

(ग) चालीस मुकतों की कमाई— गुरु-पंथ से विमुख होकर मत मरना, बल्कि सत्य की जंग में अपनी कुर्बानी देना।

(घ) 'हठ' की कमाई— निष्ठा से न डगमगाने की कमाई है, जैसे श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब ने किया। सत्य के सिद्धांत के लिए अपने हठ पर दृढ़ रहना।

(ड.) जप-तप की कमाई— गुरु साहिबान और महान संतों की भाँति अपने जप-तप के बल द्वारा सुधार करना।

(च) नाम जपना—बड़ी कमाई है। इसमें से ही सारा सदाचार उत्पन्न होता है।

(छ) वंड छकना— जो पास है, साथियों के साथ मिल कर छकना भी कमाई है।

(ज) देग चलानी— आगंतुक की लंगर आदि छका कर सेवा करना।

(झ) तेग़ चलाना— युद्ध में कौशल दिखाना।

(ञ) देख कर अनदेखा करना— क्षमा-याचना करना।

(ट) धर्म न हारना— असह्य दुख से भी घबरा कर अपने जत्-सत्, धर्म, रहित का त्याग न करना। केशों को श्वासों तक संभाल कर रखना, सिक्खी निभानी।

कमाई तो सदा कुर्बानी के साथ ही हो सकती है। सिक्ख स्त्री-पुरुषों ने इन रूपों में से किसी न किसी रूप की कमाई करनी है। ये कमाई के स्वीकार्य स्वरूप हैं। (Standard

Forms Of Contribution To the Cause.)

यही गुरु साहिबान की कमाई के भी स्वरूप हैं। श्री गुरु अरजन साहिब और श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की कमाई का स्वरूप धर्म-सत्य के लिए 'हठ' का था, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कमाई का स्वरूप धर्म-सत्य के लिए तेग़ चलाने का था। शेष गुरु साहिबान की कमाई के स्वरूप भी निर्भय और निर्वैर रह कर लोक-सेवा, बाँट कर छकना, देग चलाना थे, जो उन्होंने जप-तप, सिमरन द्वारा पैदा किये।

सिक्खों की कमाई के भी बड़े स्वरूप ऐसे ही रहे हैं।

४. सरबत्त ख़ालसा पंथ : ख़ालसा जी, पंथ रूप में एकजुट जत्थेबंद रह कर ही विश्व-एकता और सत्यप्रस्ती के कर्तव्य साक्षात कर सकते हैं। ख़ालसा जी को पंथ बनाने और एकजुट रखने वाली चीजें क्या हैं? अरदास में 'पंथ की जीत' ही सरबत्त ख़ालसा का उद्देश्य है। ख़ालसा जी को पंथक जत्थेबंदी का स्वरूप देने वाले अरदास में सुझाए निम्नलिखित उद्देश्य, आदर्श, विरसे (विरासत का गौरव), विश्वास और उद्देश्य हैं। जब तक यह एकजुटता बनी रहेगी, पंथ कायम रहेगा और '੧ੴ' की 'फतह' के लिए प्रयत्नशील रहेगा।

१. ੧ੴ का विश्वास।

२. फतह का विश्वास।

३. भगौती के सहायक होने का विश्वास।

४. दस पातशाहियों का विश्वास।

५. श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ, दर्शन, दीदार का सत्कार।

६. पाँच प्यारों, चार साहिबज़ादों, चालीस मुकतों और हठियों-जपियों का गौरव।

७. कमाई करने वालों का मान और सम्मान।

८. धर्म न हारने का प्रण।

९. पाँच तख़्तों का अदब।

१०. समूह गुरुद्वारों का सम्मान। (जो गुरुद्वारे पंथ से दूर हो चुके हैं, उनके लिए रोज़ाना अरदास होती है।)

११. वाहिगुरु चित्त आवे। (याद आए)

१२. "जहाँ जहाँ ख़ालसा जी साहिब, तहां तहां रच्छिआ रियायत" होती रहेगी।

१३. देग-तेग़ चलती रहेगी।

१४. बिरद बाणे का मान रहेगा।

१५. पंथ की जीत का विश्वास रहेगा।

१६. सामूहिक याचना (दान), सिक्खी, केश, रहित, विवेक, विसाह के लिए।

१७. श्री अमृतसर साहिब का मान और सम्मान।

१८. चौंकियों, झंडों, बुंगों का मान।

१९. नाम की याचना।

अरदास में पंथक एकता बनाए रखने के लिए और ख़ालसा के उद्देश्य की स्थापना के लिए इन उद्देश्यों की एकता व इनका गौरव सहायक हैं।

५. याचना (दान)

ੴ की 'फतह' के लिए ख़ालसा को विशेष आचरण की आवश्यकता है। उस आचरण के लिए 'अरदास' में दान की याचना की गई है। याचना इन चीजों की की गई है :

१. सिक्खी का दान, २. केशों का दान, ३. रहित का दान, ४. बिबेक, ५. विसाह, ६. भरोसा, ७. नाम दान, ८. श्री अमृतसर साहिब का स्नान, ९. चौंकियों की अटलता, १०. झंडे की अटलता, ११. बुंगों की अटलता, १२. मन झुका हुआ विनम्र, १३. बुद्धि ऊँची, १४. वाहिगुरु जी की रक्षा, १५. सेई प्यारे मेल जिन्हां मिलिआं तेरा नाम चित्त आवे।

सिक्ख इन गुणों के लिए प्रतिदिन याचना करता है और वाहिगुरु पर विश्वास करता है कि उसे यह दान प्राप्त होगा। इस आचरण द्वारा ही वह 'वाहिगुरू जी की फतह' के आदर्श को पूरा कर सकता है।

६. सरबत्त का भला : अरदास यह दृढ़ करवाती है कि परमात्मा का आदेश यह है कि सरबत्त का भला हो। यह केवल एक ही साधन द्वारा हो सकता है और वो साधन यह है कि नाम की चढ़दी कला हो। जैसे-जैसे नाम वाला आचरण मानवता में पैदा होता जाएगा, मानवता साझी और एक होती जाएगी। जैसे-जैसे यह होता जाएगा, मानवता का कल्याण निकट होता जाएगा। नाम 'ੴ' की उपासना है— एकता की पूजा, एकता की फतह, ज्ञान की फतह है।

नाम वाला आचरण कैसा होता है? दस गुरु साहिबान वाला, पाँच प्यारों वाला, चार साहिबज़ादों आदि वाला, कमाई वाला, सिक्खी केशों-श्वासों संग निभाने वाला। मन नींवां (झुका हुआ/विनम्र) और बुद्धि ऊँची वाला।

नाम कमाई वाला जीवन है— जप, तप, नाम जप, वंड छकने, देग व तेग़ चलाने वाला और देख कर अनदेखा करने वाला। 'नाम' ੴ की फतह की चाहत का जीवन है।

'नाम' में सरबत्त का भला है। हमारी अरदास है कि सबको 'नाम' मिले, ताकि सरबत्त का भला हो!

गुरसिक्ख की चढ़दी कला का आधार है : सहजावस्था

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

मानव जीवन परमात्मा की अनमोल दात है। चौरासी लाख योनियों (जन्मों, शरीरों) में मनुष्य-योनि सर्वश्रेष्ठ योनि मानी गई है। गुरबाणी में मनुष्य को समस्त जीवों में शिरोमणि जीव कहा गया है— *"अवर जोनि तेरी पनिहारी।। इसु धरती महि तेरी सिकदारी।।"* मनुष्य- शरीर बड़े भाग्य से प्राप्त होता है। यह एक दुर्लभ अवसर की भांति है जो परमात्मा ने कृपा करते हुए प्रदान किया है ताकि परमात्मा से बिछड़ा हुआ जीव गुण धारण कर, श्रेष्ठ कर्म कर आवागमन के चक्र से मुक्त हो सके; इस अवसर का सदुपयोग कर जीव परमात्मा में अभेद हो सके। सभी जीवों में मनुष्य ही ऐसा सौभाग्यशाली है जिसे उत्तम तन, तन में चिंतन व मनन की शक्ति प्राप्त हुई है। उत्तम तन और गुण उसे विशेष उद्देश्य हेतु प्राप्त हुए हैं :

चउरासीह लख जोनि विचि
उतमु जनमु सु माणसि देही।
अखी वेखणु करनि सुणि
मुखि सुभि बोलणि बचन सनेही।
हथी कार कमावणी पैरी चलि सतिसंगि मिलेही।
किरति विरति करि धरम दी
खटि खवालणु कारि करेही।

(भाई गुरदास जी, वार १: ३)

मनुष्य को नेत्र मिले हैं— सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान परमात्मा का दर्शन करने के लिये, श्रवण-शक्ति प्राप्त हुई है— परमात्मा का यश सुनने के लिये, रसना प्राप्त हुई है— शुभ, प्रेममयी वचन बोलने के लिये। हाथ शुभ कर्म करने हेतु हैं और पैर साधसंगत में जाने हेतु प्राप्त हुए हैं। मानव जीवन का उद्देश्य धर्म की मर्यादा में रह कर जीवन व्यतीत करना है, जिससे स्वयं का और समाज का हित हो सके। इससे जीवन परम आनंद से भर उठता है। परमात्मा ने उत्तम मानव जीवन दिया है तो आनंद की अनुभूति के लिये ही दिया है। परमात्मा आनंद स्वरूप है। उसकी कृपा से आनंद ही आनंद उत्पन्न होता है, किन्तु कोई अति सौभाग्यशाली (अपवादस्वरूप) ही होगा जिसे जीवन में परिपूर्ण आनंद प्राप्त हुआ

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनाऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९

होगा। चतुर्दिग दुख ही दुख है। हर मनुष्य किसी न किसी कारण से दुख भोग रहा है :

फरीदा मै जानिआ दुखु मुझ कू
दुखु सबाइऐ जगि ।।
ऊचे चड़ि कै देखिआ तां घरि घरि एहा अगि ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३८२)

सभी दुखी हैं। प्रत्येक मनुष्य के दुख के अपने-अपने कारण हो सकते हैं, किन्तु दुख की अनुभूति एक जैसी ही होती है। सभी अपने दुख की स्थितियां बदलना चाहते हैं। दुख कैसा भी हो, दुख का अनुभव मनुष्य का मन ही करता है। इसका तात्पर्य यह कि दुख का मूल मन के अंदर ही है। दुख हो तो मन विह्वल रहता है, भटकता है, दुविधा बनी रहती है।

जब से मानव समाज अस्तित्व में आया है तभी से दुख है। दुख दूर करने के यत्न निरंतर होते रहे किन्तु कोई प्रमाणिक निदान नहीं खोजा जा सका। जीवन, जिसे मनुष्य का आनंद-काल होना था, दुखों का पर्याय बन कर रह गया। सुख के लोभ में मनुष्य भ्रम और छलावों मे फंसता चला गया। गुरु साहिबान ने मनुष्य को भ्रमों और छलावों से बाहर निकाला। गुरु नानक साहिब ने रोग की पहचान भी की और रोग का निदान भी बताया। गुरु साहिब ने कहा कि रोग मन है और दवा गुरु के ज्ञान की मर्यादा का पालन है :

मनु कुंचरु काइआ उदिआनै ।।
गुरु अंकसु सचु सबदु नीसानै ।।
राज दुआरै सोभ सु मानै ।।१ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २२१)

जैसे वन में हाथी मस्त होकर विचरता है, कभी भी किसी भी दिशा मे कदम बढ़ा देता है वैसा ही मनुष्य के शरीर में मन है। गुरु नानक साहिब ने कहा कि जब मन की गति पर गुरु के सच्चे ज्ञान का अंकुश लग जाता है, यही मन संसार ही नहीं, परमात्मा के दरबार में भी शोभा का कारण बन जाता है। सुख-दुख का वास्तविक संबंध मन से ही है। मन दुख का अनुभव ही नहीं करता। मन दुख का जनक भी है। मन का भेद अत्यंत गूढ़ा है जिसे जाना नहीं जा सकता। मन इतना चंचल है कि इसकी गति का कोई आंकलन नहीं कर सकता। मन को जानना और साधना अत्यंत कठिन है :

कांइआ नगरि इकु बालकु वसिआ
खिनु पलु थिरु न रहाई ।।
अनिक उपाव जतन करि थाके
बारं बार भरमाई ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११९१)

निरंकुश, चंचल मन एक पल भी स्थिर नहीं रहता है। मन बार-बार भ्रमित करता है, जिससे दुख व्याप्त होते हैं। मन की चंचलता का कारण

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने बताया है :

साधो इहु मनु गहिओ न जाई ।।
चंचल त्रिसना संगि बसतु है
या ते थिरु न रहाई ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कहा कि तृष्णा, कामना, वासना मनुष्य के मन के संग ही बस रही है। इस संग ने ही मन को चंचल कर दिया है। मन को समझना कठिन हो गया है। वर्तमान काल पदार्थवाद का है। बाजार में बेहिसाब सामान उपलब्ध है, जिसकी आवश्यकता की नकली मांग सृजित कर लोगों को भ्रमित और प्रेरित किया जा रहा है। यह पूर्ण व्यावसायिक ढंग से हो रहा है। प्रत्येक वस्तु को ऐसे प्रस्तुत किया जाता है कि उसके बिना मनुष्य का जीवन अपूर्ण और दुखमय है। मनुष्य उसे प्राप्त करने में लगा हुआ है। तृष्णा अंतहीन हो गई है और मन अधिक चंचल हो गया है। मनुष्य को सभी कुछ चाहिये, जो बाजार में दिख रहा है अथवा कम से कम वह जो पड़ोसी, संबंधी के पास है। मनुष्य स्वयं के सामर्थ्य और योग्यता की पहचान न कर दूसरों के मानदंडों पर जीवन जीना चाहता है। अन्य के सपनों को उसने अपने सपने बना लिया है। उधार के सपनों का जीवन हमारे दुख और संताप को और बढ़ा रहा है। श्री गुरु नानक साहिब ने मन को अपने मूल की पहचान करने को प्रेरित किया और सच जानने को कहा। इसके लिए मन का स्थिर होना आवश्यक है, मन में सहजावस्था का होना आवश्यक है। मन में तृष्णा की अग्नि है और विकारों का विष है तो मन सदैव उद्वेलित रहता है। वह अपने मूल अर्थात् परमात्मा की ओर एक पग भी नहीं बढ़ा सकता। गुरु साहिबान ने कहा कि मनुष्य को जीवन, संसार में रम जाने के लिये नहीं, जन्मों-जन्मों से बिछड़े परमात्मा से मेल के लिये प्राप्त हुआ है :

भई परापति मानुख देहुरीआ ।।
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३७८)

मानव, तन की प्राप्ति की एक महान घटना है। इसे समझने की आवश्यकता है। जीवात्मा परमात्मा का ही अंश है जो आवागमन के चक्र में पड़ कर परमात्मा से दूर हो गई है। सबसे बड़ा दुख परमात्मा से बिछड़ जाना है। जीवन में सुख चाहिये तो इस दुख को दूर करना होगा, मन की अवस्था को बदलना होगा। मन के अंदर प्रज्वलित तृष्णा की अग्नि को शांत करने की युक्ति गुरु साहिबान ने बताई है। यह युक्ति है— अपना मन परमात्मा को समर्पित कर देना :

मन की मति तिआगहु हरि जन

हुकमु बूझि सुखु पाईऐ रे।।
जो प्रभु करै सोई भल मानहु
सुखि दुखि ओही धिआईऐ रे।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २०९)

मनुष्य अपनी बुद्धि, चतुरता का त्याग कर परमात्मा के निर्णय, न्याय पर विश्वास करे। परमात्मा ने मनुष्य के लिये जो नियत कर रखा है वह उसे प्राप्त होना ही है। उसे कोई रोक नहीं सकता, न बदल सकता है। परमात्मा अपने निर्णय न किसी की सलाह पर करता है, न किसी के दबाव में करता है। उसका निर्णय सदैव अटल रहता है। गुरबाणी के अनुसार उसका निर्णय सदैव मनुष्य के हित में होता है। परमात्मा ने मनुष्य को जो भी दिया है उसमें मनुष्य को अपना हित देखना आ जाये तो वह तृष्णा, वासना, विकारों और माया के मोह से उबर जाता है। नदी का पानी जब शांत होता है तब ही उसके तल की गहराई के दर्शन होते हैं। मन जब स्थिर होता है तभी मन में परमात्मा के दर्शन होते हैं।

गुरबाणी में बार-बार परमात्मा के हुक्म, न्याय को स्वीकार करने की प्रेरणा मिलती है। इसी में सुख है। परमात्मा के हुक्म में रहना कथन में भले ही सरल हो किन्तु व्यवहार में अत्यंत कठिन है। इसके लिये सांसारिक रस और सांसारिक वृत्ति का त्याग करना पड़ता है। मुख्यतः तीन सांसारिक वृत्तियां हैं, जिन्हें त्रैगुण कहा गया है। ये हैं— रजो गुण, तमो गुण और सतो गुण। रजो गुण अथवा राजस से भाव संसार में बल से सुख प्राप्त करने में विश्वास करना है। संसार में बड़े बड़े राजा-महाराजा हुए हैं जिन्होंने शक्तिशाली सेनायें रखीं और विशाल राज्य कायम किये, खज़ानों में बेहिसाब दौलत संचित की और शानदार महलों में सुख भोगे। फिर भी दुख किसी न किसी रूप में उनके आस-पास ही रहे। सोने की लंका का भी देखते ही देखते पतन हो गया। तमो गुण अथवा तामस का तात्पर्य समाज के उस वर्ग से है जो भोग-विलास में सुख खोजता है, जो धन से, कुटिलता से मनवांछित प्राप्त कर लेना चाहता है, भले ही इससे अल्पकालिक सुख प्राप्त हो जाये, अंततः दुख ही भोगने पड़ते हैं। उपरोक्त दोनों गुण अधर्म की श्रेणी में आते हैं। तृतीय वृत्ति है— सतो गुण। यह प्रत्यक्ष रूप से तो धर्म का आभास कराता है, किन्तु यह देखा गया है कि धार्मिक पुरुष को अपने धार्मिक होने, विद्वान होने का अहंकार सबसे अधिक होता है। अपनी भक्ति अपनी सिद्धियों के अहंकार ने समय आने पर जीवन भर की भक्ति को निष्फल कर दिया। इससे कर्मकांड और पाखंड को भी बल मिला। गुरु साहिबान ने इन

तीनों गुणों— रजो गुण, तमो गुण और सतो गुण से उबरने का मार्ग दिखाया। रजो गुण, तमो गुण और सतो गुण से उबरने के बाद मनुष्य को निर्मल अवस्था प्राप्त होती है, जिसे चतुर्थ पद कहा गया है। यह चौथा पद ही सहज है, जिसे प्राप्त करने में गुरसिक्ख को अपना सारा जीवन लगाना है :

रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ
इह तेरी सभ माइआ ।।
चउथे पद कउ जो नरु चीन्है
तिन्ह ही परम पदु पाइआ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११२३)

सहजावस्था मानव जीवन में परम सुख की अवस्था है। सारी तृष्णायें, वासनायें शांत हो जाती हैं। मनुष्य कामना विहीन हो जाता है। दसों इंद्रियां, पांच ज्ञान-इंद्रियां और पांच कर्म-इंद्रियां वश में आ जाती हैं। विकारों का विष उतर जाता है। इस अवस्था में ही परमात्मा की महिमा के दर्शन होते हैं। परमात्मा के नाम का रस जब आ जाता है, संसार के शेष सारे रस फीके लगने लगते हैं। यही सच्चा रस है जो जीवन को आनंदित कर देता है। जीवन परमात्मा के प्रेम में रंग कर उत्साह और चाव से भर उठता है। गुरसिक्ख परमात्मा को पूर्ण समर्पित हो श्वास-श्वास उसका सिमरन करता है, पल-पल उसके प्रेम की अनुभूति कर उसके आभार में रहता है। इससे श्वास-श्वास, पल-पल उसमें उत्साह और चाव बना रहता है। इस उत्साह और चाव को ही गुरसिक्ख की चढ़दी कला की अवस्था कहा गया है। चढ़दी कला (आशावाद) का जन्म सहजावस्था से ही हुआ है। सहजावस्था में आकर जब गुरसिक्ख परमात्मा के हुक्म और निर्णय को स्वीकार करने में अपना सौभाग्य देखता है तो उसे जीवन मे आनंद का रहस्य ज्ञात हो जाता है। वह जीवन में जहां भी है, सहजावस्था में आकर उसे श्रेष्ठ बना सकता है। सरोवर नदी नहीं बन सकता, नदी सागर नहीं बन सकती, सागर आकाश नहीं बन सकता। सरोवर के सरोवर, नदी के नदी और सागर के सागर बने रहने में ही सहज और आनंद है। सरोवर तभी तक सरोवर है, नदी तभी तक नदी है और सागर तभी तक सागर है जब तक उसके किनारे बंधे हुए हैं। गुरसिक्ख भी निश्चित मर्यादा का पूर्ण निष्ठा से पालन करता है तभी उसका सहज बना रहता है, उसकी चढ़दी कला की अवस्था बनी रहती है। वह अमृत वेले उठता है, परमात्मा का सिमरन करता है, दिन भर ईमानदार किरत (कर्म) करता है और नितनेम, परमात्मा का आभार करने के पश्चात ही रात्रि-विश्राम करता है। गुरु की आज्ञा उसके लिये सर्वोपरि है,

जिसे वह बिना किसी संदेह अथवा दुविधा के स्वीकार कर लेता है, क्योंकि उसमें वो अपना हित देखता है। उसे अपने गुरु पर पूर्ण विश्वास है। इस विश्वास ने उसे चिंता-मुक्त कर दिया है। भाई लहिणा जी को गुरु नानक साहिब के हुक्म में आनंद प्राप्त होता था। वे श्री गुरु अंगद साहिब के रूप में परम पद के अधिकारी बने। श्री गुरु अमरदास साहिब भी इसी पथ पर चले। श्री गुरु अरजन साहिब और श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी ने सहजावस्था का नूतन पक्ष प्रकट किया। गुरु साहिबान के पश्चात सन् १७०८ से आज तक का काल सिक्खों की निरंतर परीक्षा का काल रहा है। बड़ी से बड़ी विपदा सिक्ख पंथ ने सहजावस्था से परास्त की है। इसका प्रमुख उदाहरण 'जैतो का मोर्चा' है, जो विश्व का सबसे लंबा और शांतिपूर्ण मोर्चा था। सिक्खों ने शांत रह कर अंग्रेज़ शासन के अत्याचार सहे, शहीद हुए, किन्तु सहज व अहिंसक रहे। अंततः यह मोर्चा विजयी हुआ।

सिक्ख सन् १९४७ की विभाजन-त्रासदी और नवंबर १९८४ की नसलकुशी से गुजरे। हजारों परिवार अर्श से फर्श पर आ गये, किन्तु पुनः अपने मनोबल और विश्वास से प्रफुल्लित हुए। जीवन में छोटा या बड़ा होना कोई मायने नहीं रखता। मनुष्य के पास जो भी है उसका सदुपयोग उसे सुंदर बना देता है। जीवन में महत्व सौन्दर्य का है। समय हो, संबंध हो अथवा पदार्थ हो, उसे सुंदर बना देना मनुष्य के मन की अवस्था पर निर्भर करता है। परमात्मा ने नन्हीं-सी तितली बनाई, किन्तु उसके पंख इतने सुंदर रंग दिये कि सभी के आकर्षण का केंद्र बन गई। मनुष्य के मन में भावनाओं का अनमोल खजाना छिपा हुआ है। सहजावस्था से इस खजाने से प्रेम, संयम और संतोष के रंग खोज कर जीवन में भरे जायें तो आनंद के झरने फूट पड़ेंगे।

गुरसिक्ख अमृत वेले उठता है और जब उगते हुए सूरज को देखता है, मन आशा से भर जाता है। सूरज के उगने में एक सहज है। लालिमा आहिस्ता-आहिस्ता कदमों से आती है और धीरे-धीरे पूरे आकाश को रंग देती है। सूरज की सहजावस्था ही उसे दोपहर के शिखर तक पहुंचाती है। सूरज के अस्त होने में भी सहजता है। वह इस विश्वास के साथ अस्त होता है कि आने वाली सुबह उसे उदय होने से रोक नहीं पायेगी। सहजता के कारण सूरज का उदय और अस्त दोनों ही मनोहर बन जाते हैं। गुरसिक्ख के जीवन की और सिक्ख इतिहास की यही विशेषता है कि सम अथवा विषम किसी भी परिस्थिति में उसकी सहजावस्था बनी रहती है। वह कभी भंग नहीं होती,

क्योंकि सिक्ख का विश्वास उस परमात्मा पर है जो संसार में एकमात्र विश्वास करने योग्य है, जो कभी निराश नहीं करता :

मेरे मन आस करि हरि प्रीतम अपुने की
जो तुझु तारै तेरा कुटंबु सभु छडाई ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८५९)

श्री दरबार साहिब पर जितनी बार आक्रमण हुए, नया स्वरूप पहले से अधिक सुंदर निखर कर आया। मुगल सिक्खों को एक जंगल में सीमित कर देना चाहते थे। आज सिक्ख विश्व के हर कोने में शानदार उपलब्धियां अर्जित कर रहे हैं। विश्व की समझ में आ गया है कि सिक्खों को न तो नकारा जा सकता है, न दबाया जा सकता है। सिक्ख कौम की वास्तविक शक्ति उस जीवन-मर्यादा का पालन करना है जो गुरु साहिबान ने बताई है। नदी का जल तब तक प्रवाहमान और उपयोगी रहता है जब तक वह किनारों के भीतर रह कर बहता है। किनारे टूट जायें तो वही जल बाढ़ बन कर विनाशकारी हो जाता है। यही कारण है कि गुरसिक्ख नित्य गुरबाणी से जुड़ा रहता है, नितनेम करता है और प्रतिदिन श्री गुरु ग्रंथ साहिब से हुक्मनामा लेकर उसे अपनी दिनचर्या में उतारता है, ताकि जीवन-मर्यादा दृढ़ होती रहे। सिक्ख हो अथवा कोई भी हो, जीवन में मर्यादा, विश्वास और सहज ही सुख और आनंद का स्रोत है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षायें मात्र सिक्ख के लिये नहीं, सम्पूर्ण मानव समाज के लिये हैं। जीवन का सच्चा सुख श्री गुरु ग्रंथ साहिब के चिंतन के केंद्र में है। यह कोई कर्मकांड अथवा पद्धति नहीं, मन की सिद्धि का विषय है। मन को जीतने का अर्थ है— संसार को जीत लेना अर्थात् निर्भय, अचिंत हो जाना। कोई भय न हो, कोई शोक न हो, उससे अधिक सुखद और क्या हो सकता है! सिक्ख अवधारणा ही 'बेगमपुरा' के सृजन की है जहां जीवन-स्थितियां सभी के लिये समान रूप से सुखपूर्ण हों। सिक्ख अरदास ही सरबत्त (समूह) के भले की करता है। यह भावना सहज मन में ही उत्पन्न होती है।

संसार का सारा ज्ञान, सारा सामर्थ्य व्यर्थ है यदि जीवन में सहजावस्था नहीं है :

किआ पड़ीऐ किआ गुनीऐ ।।
किआ बेद पुरानां सुनीऐ ।।
पड़े सुने किआ होई ।।
जउ सहज न मिलिओ सोई ।।१ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६५५)

शोधार्थियों के लिए विशेष

गुरबाणी में ज्ञान

*—डॉ. तेजिंदर पाल सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी के अनुसार दो प्रकार के मानव इस संसार में पाए जाते हैं। पहले हैं— ज्ञानवान मनुष्य, जो 'नाम' जप कर 'ज्ञान' की प्राप्ति करते हैं। 'ज्ञान' प्राप्त कर उन्हें समझ आ जाती है कि दृष्टमान् संसार स्वप्न के समान है। इसी प्रकार दूसरे प्रकार के मनुष्य अज्ञानी हैं, जो संसार को सत्य जान कर, मोह-माया में लिप्त होकर अपना जीवन व्यर्थ गंवा लेते हैं। गुरबाणी के माध्यम से मनुष्य अज्ञान का विनाश कर सकता है। अज्ञान के अंधेरे को ज्ञान के प्रकाश के बिना दूर नहीं किया जा सकता। प्रकाश द्वारा जीव का जन्म-जन्मांतर का अज्ञान ख़त्म हो जाता है। वर्णनीय है कि गुरबाणी में दर्शाया 'ज्ञान' साधारण पदार्थों के ज्ञान तक सीमित नहीं, बल्कि इसका सम्बन्ध 'ब्रह्म ज्ञान' के साथ है।

वास्तव में 'ज्ञान' मानवीय क्रिया है, जिसका सम्बन्ध मानव के बौद्धिक सामर्थ्य के साथ है। ज्ञान का सम्बन्ध, तर्क और मनोविज्ञान दोनों के साथ है। दर्शनवेत्ता और धर्म-मीमांसक व्यक्ति 'ज्ञान की वस्तु' के बारे में बताते हैं। दूसरी तरफ़ मनोविज्ञानी जिज्ञासु को ज्ञान हासिल करने के साधनों के बारे में बताते हैं। दार्शनिक स्तर पर ब्रह्म का किया गया चिंतन 'ज्ञानमार्गी' चिंतन कहा जाता है। ज्ञानमार्गी साहित्य में ज्ञान ही एक ऐसा साधन या जरिया है, जिससे परमात्मा के साक्षात दर्शन हो सकते हैं।

इस लेख का मनोरथ ज्ञान-सिद्धांत को केवल गुरबाणी के संदर्भ में समझना है। इस प्रयास में ज्ञान का अर्थ, परिभाषा और स्वरूप आदि को समझा जायेगा।

ज्ञान : अर्थ : भाई कान्ह सिंघ नाभा ने 'महान कोश' में 'ज्ञान' के अर्थ— जानना, बोध, समझ, इल्म आदि किये हैं। 'ज्ञान' संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसके अर्थ हैं— विद्वता, इल्म, समझ, बोध आदि। गुरबाणी में ज्ञान का प्रकटीकरण विवेक, बुद्धि, मति, गुरमति आदि शब्दों के माध्यम से किया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में यह शब्द साधारण अर्थों के बिना विशेष अर्थों में भी इस्तेमाल किया गया है। इस कारण 'ज्ञान' 'आध्यात्मिक ज्ञान' का वाचक बन गया है।

'ज्ञान' के शाब्दिक अर्थों में आम जानकारी से लेकर परमार्थक बोध और आत्मिक प्रकाश शामिल हैं। इस शब्द को कई

**असिस्टेंट प्रोफेसर (धर्म अध्ययन), यूनिवर्सिटी कॉलेज, मीरांपुर (जिला पटियाला)—१४७१११, फोन : ९९८८०-०४७३३*

अर्थों में इस्तेमाल किया जाता है। साधारण अर्थों में 'ज्ञान' व्यक्ति को किसी दुनियावी अनुभव से प्राप्त होता है, जो कि अंतर्मुखी अनुभव से अलग है।

आम बोलचाल की भाषा में 'ज्ञान' को बुद्धि-मंडल तक सीमित रख कर, आक्षरिक ज्ञान को ही सब कुछ समझा जाता है। ऐसी समझ केवल 'जानकारी' (Information) है। दरअसल 'जानकारी' 'ज्ञान' नहीं है। हाँ, ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा मन में हो तो यह जानकारी ज्ञान-प्राप्ति की तरफ पहला कदम हो सकती है, जिसने बोध (Knowledge) और विवेक (Wisdom) बनना होता है। दुनियावी जानकारी मानव को अहंकार के अधीन कर अंदर से खोखला कर देती है, परंतु ज्ञान-प्राप्ति से मानव अंदर-बाहर से भर जाता है। जानकारी, अहंकार पैदा करती है और व्यक्ति को मालिक होने के झूठे एहसास के साथ भरती है, जबकि ज्ञानवान व्यक्ति अपने आप को एक बहुत ही मामूली तथा तुच्छ जीव समझता हुआ सेवक बन कर रहता है। आध्यात्मिक संदर्भ में 'ज्ञान' 'बुद्धि' नहीं, बल्कि आत्म-प्रकाश की 'शुद्धि' है।

ज्ञान के आधार पर मनुष्य ने अपने आप को पशु जाति से अलग किया हुआ है। गुरबाणी की दृष्टि में जो मनुष्य इंद्रिय भोगों को जीवन का निशाना मान लेते हैं, वे पशु के समान ही होते हैं। जिज्ञासु मानवीय ज्ञान के माध्यम से बौद्धिक और मानसिक आनंद उठाता है, परंतु आत्मिक मंडलों में विचरण करने वाले मनुष्यों को आक्षरिक ज्ञान संतुष्ट नहीं कर सकता। हज़ारों पुस्तकों का ज्ञान उनके अनुभव के सामने कुछ भी नहीं।

ज्ञान : परिभाषा : ज्ञान को परिभाषित करना सरल कार्य नहीं। पूरबी और पश्चिमी विद्वानों ने 'ज्ञान' को अपने-अपने दृष्टिकोण से परिभाषित किया है। पूरबी विद्वानों में से ज़्यादातर सिक्ख विद्वानों ने ज्ञान-सिद्धांत की परिभाषाएं दी हैं। इनमें से डॉ. वजीर सिंघ का कहना है कि "ज्ञान मानवीय क्रिया है, जिसका सम्बन्ध मानव के बौद्धिक सामर्थ्य के साथ है।" ज्ञान एक माध्यम है जिसके द्वारा अन्य वस्तुएँ प्रकाशित होती हैं। ज्ञान एक ऐसा व्यापक विषय है जो स्थूल भौतिक जीवन-पद्धति से लेकर सूक्ष्म आध्यात्मिक साधना तक पसरा हुआ है।

सुकरात के अनुसार ज्ञान एक गुण है। प्लेटो ज्ञान को चेतन जगत का नहीं, बल्कि इससे आगे के अत्यंत श्रेष्ठ जगत और परम यथार्थ जगत, जिसे 'विचार' कहा जाता है और चेतन दुनिया जिसकी एक धुंधली-सी परछाईं मात्र है, का ज्ञान समझता है।

इसी प्रकार प्रो. रसल के विचारानुसार, "ज्ञान वो है जो मानव के मन को रौशन करता है।"

गुरबाणी में ज्ञान : गुरबाणी में मिलता ज्ञान-सिद्धांत परंपरागत ज्ञान-सिद्धांत के बिल्कुल

विपरीत है। गुरु साहिब की दृष्टि में यह दृष्टमान प्रसार इंद्रियों का भ्रम है, क्योंकि सत्य केवल परमात्मा है, जो शारीरिक इंद्रियों के साथ नहीं, बल्कि आत्मिक अनुभव द्वारा ग्रहण हो सकता है। इसका मतलब यह नहीं कि दृष्टमान प्रसार सत्य नहीं, बल्कि गुरबाणी जिज्ञासु को दृष्टमान जगत में व्यापक प्रभु-ज्योति का अनुभव करने के लिए प्रेरित करती है। गुरु-फरमान है :

सरब जोति रूपु तेरा देखिआ
सगल भवन तेरी माइआ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३५१)

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा दर्शाये गए ज्ञान-सिद्धांत में 'सबद' और 'सुरत' का सुमेल है। गुरबाणी के अनुसार आत्मिक ज्ञान हासिल करना आसान कार्य नहीं, इसके लिए विशेष प्रयास और प्रशिक्षण की ज़रूरत होती है। परमात्मा का चिंतन इतना सीधा और साधारण नहीं, जितना दुनियावी या दृष्टमान प्रसार को देखना है। इसके साथ ही आत्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए किसी तरह का तर्क, दलील और विद्या के अमल का कोई अर्थ नहीं। इनसे केवल अहं ही उत्पन्न होता है। गुरु साहिब इस सम्बंध में समझाते हैं :

गिआनु न गलीई ढूढीऐ
कथना करड़ा सारु।।
करमि मिलै ता पाईऐ
होर हिकमति हुकमु खुआरु।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४६५)

आत्म-ज्ञान वास्तव में परमात्मा का ज्ञान है। आत्म-ज्ञान वह संपूर्ण ज्ञान है, जिसे जिज्ञासु अपनी सभी शक्तियों का इस्तेमाल कर प्राप्त करता है। आत्म-ज्ञान की प्राप्ति आत्म-संयम, आत्म-केंद्रित लालसा, भय, ईर्ष्या और चिंता से मुक्त होकर अपनी तृष्णाओं को जीत लेने से होती है।

सिक्ख धर्म में ज्ञान की प्राप्ति 'सबद' की कमाई द्वारा होती है। 'सबद' को 'खसम की बाणी' कह कर उपमा की गई है। इस 'सबद' का श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकारों ने पहले स्वयं अनुभव किया, फिर उस अनुभव को 'बाणी' के माध्यम से प्रकट किया। वर्णनीय है कि 'गुरबाणी' और 'बाणी' दोनों शब्द 'सबद' के अर्थों में ही आए हैं। सिक्ख धर्म में अकाल पुरख, गुरु और सबद एक-दूसरे के पूरक नहीं, बल्कि एक ही रूप हैं। अकाल पुरख भी सबद-रूप है, बाणी भी सबद है और गुरु भी सबद-रूप ही है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उल्लेख आता है कि पारब्रह्म ने अपना 'आपु' (आप) 'गुरु' में समा कर 'सबद-गुरु' का प्रसार किया :

गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२७९)

ज्ञान की किस्में : ज्ञान दो प्रकार का है — साधारण ज्ञान और ब्रह्म-ज्ञान या आत्म-ज्ञान। साधारण ज्ञान से तात्पर्य किसी मानसिक अवस्था से नहीं, बल्कि किसी वस्तु को जानने

से लिया गया है। गुरबाणी में साधारण ज्ञान को मायावी ज्ञान, कुज्ञान (काची देह मोह फुनि बांधी सठ कठोर कुचील कुगिआनी) या फोकट ज्ञान (आन जंजार ब्रिथा स्त्रमु घालत बिनु हरि फोकट गिआन ज्ञान) भी कहा गया है। इसके विपरीत गुरबाणी में ब्रह्मनिष्ठ ज्ञान को सुज्ञान (मल मूत मूड़ जि मुगध होते सि देखि दरसु सुगिआना); ब्रह्म-ज्ञान (जो जो पेखै सु ब्रहम गिआनु); आत्म-ज्ञान (मनूआ डोलै दस दिस धावै बिनु रत आतम गिआना); अंतरि ज्ञान (अंतरि गिआनु न आइओ मिरतकु है संसारि); सहज ज्ञान (उपजै सहजु गिआन मति जागै) ; तत्व-ज्ञान (सहज सिफति भगति ततु गिआन); गुर-ज्ञान (तजि हउमै गुर गिआन भजो); निर्मल ज्ञान (निरमल गिआनु धिआनु अति निरमलु निरमल बाणी मंनि वसावणिआ); अमृत ज्ञान (अंम्रितु गिआनु महा रसु भोगु); पूर्ण ज्ञान (सोई जपु जो प्रभ जीउ भावै भाणै पूर गिआना जीउ) और बिसेख ज्ञान (सभ महि ऊच बिसेख गिआनु) कहा गया है।

ज्ञान-प्राप्ति का उद्देश्य : ज्ञान-प्राप्ति का प्रमुख उद्देश्य सच्चाई का अनुभव करना है। ज्ञान-सिद्धांत का केंद्र-बिंदु ही 'सत्य' है। व्यक्ति जब किसी किस्म की जानकारी हासिल करता है, तो उसे किसी तथ्य या सच्चाई के बारे में पता चलता है। कई सच्चाइयां इतनी प्रत्यक्ष नहीं होती कि उनको शारीरिक इन्द्रियों के माध्यम से देखा जा सके। इस अवस्था में मानव अपनी बुद्धि की मदद से गुप्त सच्चाइयों की खोज करता है। ऐसी सच्चाई बौद्धिक सामर्थ्य से परे, कोई दिव्य सच्चाई होती है, जो अंतरबोधी ढंग के साथ प्रकट हो सकती है। इस सच्चाई की खोज के लिए मानव को अपने अंदर से संभव शक्तियों को विकसित करने की ज़रूरत होती है, किसी ऐसी दिव्य दृष्टि को अमल में लाने की ज़रूरत होती है, जो उसकी आत्मा को दिव्य सत्यता के रूबरू कर दे। गुरबाणी में ऐसी दृष्टि के लिए 'अखड़ीआं बिअंनि' का संकेत दिया गया है, अर्थात् असाधारण आँखें अदृष्ट और अरूप प्रियतम को प्रत्यक्ष रूप में देख लें, जैसे साधारण आँखों के साथ किसी वस्तु को देखते हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने उस सर्वोच्च सत्यता को जानने का मार्ग इस तरह दिखाया है :

सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ।।
कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४६८)

धर्म-मीमांसा की दृष्टि से ज्ञान इन्द्रिय-प्रेक्षण, बुद्धि और अंतर-बोध की तीन परतों में बाँटा जाता है, जिनका विवरण निम्नलिखित है :

१. इन्द्रिय प्रेक्षण (इन्द्रावी ज्ञान) से तात्पर्य देखना है। यह ज्ञान-इन्द्रियों की क्रिया का फल है। यह निम्न स्तर का भौतिक ज्ञान है। डॉ. वजीर सिंघ के अनुसार, ज्ञान-इन्द्रियों के माध्यम से मानव को कच्ची सामग्री प्राप्त होती

है, आँखों के माध्यम से दृष्टिगोचर वस्तुओं के रूप-रंग, कानों के माध्यम से आवाज, नाक के माध्यम से गंध (सूँघने की सामग्री) आदि। इन्द्रिय-प्रेक्षण की सहायता के लिए विज्ञान और तकनीक द्वारा निर्मित दूरबीनों, ख़ुर्दबीनों, विभिन्न साज़- सामान, यंत्र तथा भौजार उपलब्ध हैं।

२. बुद्धि : डॉ. वजीर सिंघ का विचार है कि, ''ज्ञान-प्राप्ति और ज्ञान की सिद्धांतकारी में इन्द्रिय-प्रेक्षण (इन्द्रियों द्वारा देखना) और बौद्धिक क्रिया का सहयोग ज़रूरी है। बौद्धिक शक्ति इन्द्रिय-प्रेक्षण के माध्यम से प्राप्त हुई सामग्री पर कार्य करती हुई, व्यक्ति को ज्ञान का प्रकाश प्रदान करती है। इस प्रकार ज्ञान-प्रेक्षण और बुद्धि के आपसी सहयोग का फल है। एक के बिना दूसरा अधूरा है।''

बुद्धि का सम्बन्ध मानसिकता के साथ है। साधारण मानव की बुद्धि ख़्याली होती है, परन्तु जिज्ञासु की बुद्धि विवेक के माध्यम से निर्मल हुई होती है। बुद्धि के विवेक या निर्मल होने का आधार 'गुरु-ज्ञान' और 'नाम-सिमरन' है। नाम-सिमरन बुद्धि में से फलसफे वाली ख़ुश्की ख़त्म कर इसे अनुभव के रंग में रंग देता है। डॉ. शेर सिंघ का विचार है कि गुरबाणी बुद्धि को नकारती नहीं, बल्कि इसमें बुद्धि और अनुभव के सहयोग पर ज़ोर दिया गया है। बुद्धि के लिए अनुभव प्रकाश है और अनुभव के लिए बुद्धि ठिकाना। अनुभव के बिना बुद्धि अंधी है और बुद्धि के बिना अनुभव लंगड़ा है। भाई कान्ह सिंघ नाभा विवेक-बुद्धि को विचार-बुद्धि कहते हैं। ज्ञान-प्राप्ति में विवेक-बुद्धि कृपा-दृष्टि के रूप में एक सक्रिय साधन है। विवेक-बुद्धि चाहे पूर्ण ज्ञान नहीं, परन्तु अनुभव की तरह ज्ञान का हिस्सा है।

३. अंतर-बोध : विवेक-बुद्धि अनुभव के साथ मिल कर अंतर-बोध (intuition) बन जाती है। अंतर-बोध का आधार न ज्ञान-इन्द्रियां हैं, न बौद्धिक शक्ति। इसे आत्मा की दैवी शक्ति के साथ जोड़ा जाता है, जिसका कार्य किसी दृष्ट या अदृष्ट वस्तु का प्रत्यक्ष ज्ञान देना है। अतंर-बोध असली और ऊँचा ज्ञान है। यह अंदरूनी आँख के साथ देखा हुआ 'सत' का अनुभव है। इसीलिए 'ब्रह्म-ज्ञान' को 'अनभउ प्रकाश' या 'सुते प्रकाश' (Spiritual Sight) भी कहा जाता है। अनुभव द्वारा ही किसी सच्चाई के अंदर तक पहुँचा जाता है, जिससे प्रत्येक वस्तु अपना ही अंग लगती है। अनुभव द्वारा ही आत्म-ज्ञान की प्राप्ति होती है। जब अनुभव और बुद्धि दोनों मिल कर इकट्ठे काम करते हैं तो सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है। 55अनुभव आगे चल कर रहनुमाई करता है और बुद्धि पीछे एक सहायक के रूप में काम करती है।

ब्रह्म-ज्ञान में 'स्मृति', 'श्रुति' और 'दृष्टि' तीनों ही मिले होते हैं। स्मृति वह शक्ति है जो अंतरात्मा में छिपे 'सत्' को प्रकट करती

है। 'श्रुति' के माध्यम से सत् मन में प्रकाशमान होता है और दृष्टि सत् का प्रत्यक्ष दर्शन करती है। ब्रह्म-ज्ञानी समदृष्टा इसी लिए है, क्योंकि उसकी नज़र में अंतर-बोध और विवेक दोनों शामिल होते हैं।

वैज्ञानी अंतर-बोध को विशेषता नहीं देते। उनके लिए संवेदना और बौद्धिक सामर्थ्य ही ज्ञान-प्राप्ति के साधन के रूप में पर्याप्त हैं। दर्शनवेत्ता और धर्मचिंतन अंतरबोध को समूह ज्ञान का माध्यम स्वीकार करते हैं। कई चिंतकों ने संवेदना-बुद्धि-अंतरबोध के समूह को ज्ञान-प्राप्ति के लिए सही और पूर्ण माध्यम स्वीकार किया है। उनके लिए बौद्धिक क्रिया का और ज्यादा सूक्ष्म रूप ही अंतरबोध है, जो व्यक्ति की विकसित मानसिकता का निष्कर्ष है।

ज्ञान की ज़रूरत को जिज्ञासु ने अनुभव किया है, क्योंकि ज्ञान-जिज्ञासा की अनुपस्थिति में आध्यात्मिक जीवन की ऊँची मंजिलें प्राप्त नहीं होती। आत्मिक ज्ञान प्राप्त करना इसलिए भी ज़रूरी है, क्योंकि पुस्तकें पढ़ कर प्राप्त किया ज्ञान मानव के अंदर केवल अहंकार ही पैदा करता है। अहंकार परमात्मा से दूर करता है। ज्ञान भ्रम, दुविधा एवं दुरमति का नाश करता है और जिज्ञासु की तृष्णाएं भी ख़त्म करता है। भक्त कबीर जी फरमान करते है :

देखौ भाई ग्यान की आई आंधी।।
सभै उडानी भ्रम की टाटी
रहै न माइआ बांधी।।१।।रहाउ।।
दुचिते की दुइ थूनि गिरानी
मोह बलेडा टूटा।।
तिसना छानि परी धर ऊपरि
दुरमति भांडा फूटा।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३३१)

श्री दसम ग्रंथ साहिब में गुरु साहिब फरमान करते हैं कि इस शरीर को शुभ कर्मों का साधन और धैर्य का घर बना कर, उसमें विवेक का दीया जला कर, इस घर में से कातरता के कूड़ को ज्ञान के झाड़ू से साफ कर देता है :

धंनि जीओ तिह को जग मै
मुख ते हरि चित मै जुधु बिचारै।।...
गिआनहि की बढनी मनहु थाह लै
कातरता कुतवार बुहारै।।

(श्री दसम ग्रंथ साहिब)

आत्म-ज्ञान प्राप्त कर मानव कर्मों का त्याग नहीं करता, बल्कि वह परोपकारी बन जाता है। गुरबाणी के अनुसार ज्ञानवान व्यक्ति न तो किसी व्यक्ति से डरता है और न ही किसी को डराता है :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन।।
कहु नानक सुनि रे मना
गिआनी ताहि बखानि।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

गुरु : ज्ञान-दाता : साधकों के अनुसार 'अज्ञान' या 'अविवेक' ही सभी दुखों का

मूल कारण है। इन दुखों से छुटकारा पाने के लिए ज्ञान की बहुत ज़रूरत है। ज्ञान द्वारा दुनियावी और परमार्थक सच्चाइयों को अनुभव कर साधक अपने परम उद्देश्य की तरफ बढ़ता है, इसलिए ब्रह्म-ज्ञान की प्राप्ति हेतु 'गुरु' का महत्व दृढ़ करवाया गया है।

सिक्ख धर्म में 'गुरु' का महत्वपूर्ण स्थान है। गुरु ही नाम-दाता है। दूसरे शब्दों में, गुरु से ही 'नाम' की प्राप्ति होती है। गुरबाणी में 'नाम' के लिए 'ज्ञान' शब्द भी इस्तेमाल किया गया है। अकाल पुरख और मानव के बीच गुरु एक अहम कड़ी है। 'गुरु' का अर्थ अंधेरे से प्रकाश करने वाला है। इस सम्बंध में गुरबाणी में अनेक स्थान पर पुष्टि होती है। श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि चाहे सैकड़ों चंद्रमा चढ़ जाएँ, हज़ारों सूर्य का प्रकाश हो जाये, इतनी रौशनी होने के बावजूद भी गुरु के बिना घोर अंधेरा ही है :

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ।।
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४६३)

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार ज्ञान गुरु के बिना प्राप्त नहीं हो सकता :

कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होइ ।।
गिआन का बधा मनु रहै
गुर बिनु गिआनु न होइ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४६९)

इस ज्ञान के साथ यम और काल के प्रभाव को ख़त्म किया जा सकता है :

गुर गिआनु खड़गु हथि धरिआ
जमु मारिअड़ा जमकालि ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २३५)

यह ज्ञान गुरु द्वारा दिया ऐसा योद्धा है जिसे पा लेने से अज्ञान रूपी अंधेरा मिट जाता है और मन प्रकाशित हो जाता है अर्थात् जिज्ञासु को वास्तविकता की समझ हो जाती है :

गिआन अंजनु गुरि दीआ
अगिआन अंधेर बिनासु ।।
हरि किरपा ते संत भेटिआ
नानक मनि परगासु ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २९३)

ज्ञानवान मानव के लक्षण : श्री गुरु नानक देव जी ज्ञान की दुधारी खड्‌ग के साथ तुलना करते हुए बताते हैं कि काम, क्रोध आदि पाँच विकारों को 'शब्द' के द्वारा जीत कर जब व्यक्ति ज्ञान की खड्‌ग द्वारा मन के सम्मुख होकर जूझता है तो मन की सभी वासनाएं पुन: मन में ही समा जाती हैं और वही व्यक्ति की शख्सियत के गुण बन जाती हैं :

गिआन खड़गु लै मन सिउ
लूझै मनसा मनहि समाई हे ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०२२)

ज्ञानवान मानव के लक्षण निम्नानुसार हैं :

१. दुरमति का नाश : ज्ञान-प्राप्ति से दुरमति का नाश हो जाता है और व्यक्ति का हृदय अपने अंदरूनी गगन-मंडल के अमृत रस में पूर्ण रूप

में भीग जाता है :

उपजै गिआनु दुरमति छीजै ।।
अंम्रित रसि गगनंतरि भीजै ।।
एसु कला जो जाणै भेउ ।।
भेटै तासु परम गुरदेउ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९७४)

२. कर्म-नाश : ज्ञान-प्राप्ति द्वारा संस्कार पैदा करने वाले कर्मों से छुटकारा मिल जाता है :

गिआनै कारन करम अभिआसु ।।
गिआनु भइआ तह करमह नासु ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६७)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी का अध्ययन करने के पश्चात् यह ज्ञान होता है कि मानव को आत्म-ज्ञान प्राप्त होने से उसके मन में वैराग्य और उदासीनता पैदा होती है। वह संतोषी और तृप्त हो जाता है। जिज्ञासु का मन सहजावस्था में प्रवेश कर शश्वत सुख प्राप्त करता है। 'सहज' शब्द का अर्थ दो पक्षों से विचारा जाता है। पहला, 'सहज' एक मार्ग का नाम है, जिस पर चल कर जिज्ञासु विशुद्ध ज्ञान प्राप्त कर अपने मन की शुद्धि करता है और इसके माध्यम से उसे वह दृष्टि प्राप्त होती है, जिसे धार्मिक जीवन का आदर्श माना गया है। दूसरा, 'सहज' उस आत्मिक अवस्था का नाम है जिस पर जिज्ञासु अपनी साधना द्वारा पहुँचता है।

यह ऐसी व्यवस्था है जहाँ मानव को ज्ञान हो जाता है कि समूचा दृष्टमान जगत झूठ है, अर्थात् नश्वर है। इसने एक दिन ख़त्म हो जाना है। इसी कारण ज्ञानवान पुरुष कुछ भी मांगने से परहेज़ करता है। गुरबाणी का फरमान है :

किआ मागउ किछु थिरु न रहाई ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८१)

३. विस्मय (विस्माद) : गुरमति में ज्ञान-प्राप्ति का सबसे बड़ा फल 'विस्मय' है। आश्चर्यता, ख़ुशी और आनंद को विस्मय कहा जाता है। यह विस्मय अकथनीय है, जो जिज्ञासु को ईश्वर के साथ जोड़ता है :

पारब्रहमु प्रभु द्रिसटी आइआ
पूरन अगम बिसमाद ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३२०)

विस्मयकारी दृश्य और तजुर्बा कोई मनः-कल्पित भ्रम या निराधार भ्रम नहीं, बल्कि यह तो एक प्रत्यक्ष सच्चे और ठोस वजूद का ज्ञान है। वह ज्ञान, जो ज्ञान-इन्द्रियों के माध्यम से नहीं होता, स्थूल आँखों के द्वारा देखा नहीं जा सकता और कानों के द्वारा सुना नहीं जाता। ज्ञान-इन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त किया ज्ञान बुद्धि का विषय बन कर रह जाता है। बुद्धि तो रंग, रस, रूप आदि में ही भूली रहती है। बुद्धि प्रत्येक वस्तु को अलग कर देखती है। मिसाल के तौर पर फूल को, फूल की पत्तियों को, सबको अलग-अलग कर देखती है और इस भिन्नता में ही रह जाती है, जबकि सम्पूर्णता का ज्ञान, सम्पूर्णता का स्वाद अनुभव के माध्यम से आता है।

अनुभव, वस्तु के अस्तित्व में प्रवेश कर

जाता है और उसके साथ एक होकर विस्मय पैदा करता है। भेद, अंतर या बेगानापन बुद्धि का फल है। अनुभव, एकता और सर्वएकता का एहसास देता है। ज्ञाता, ज्ञान और गेय- पुरुष, वस्तु और उसका जानना, ये सब एक रूप हो जाते हैं। यह विस्मयकारी अनुभव है जो कि मानव को दृष्टमान के पीछे सर्वव्यापी ज्योति के साथ जोड़ता है। विस्मयकारी पुरुष व्यवहार में ही परमार्थ के नज़ारे देखता है। सृष्टिकर्ता और सृष्टि को ओत-पोत कर एक रूप बताता है।

४. ब्रह्मंडीय विशालता का अनुभव : ब्रह्मांड की विशालता और प्रभु की रचनात्मिक शक्ति की अनेक गहरी परतों के बारे में गुरबाणी में अनेक जगह संकेत मिलते हैं। इस दृष्टमान जगत में अनेक प्रकार की प्राकृतिक शक्तियां हैं। इतना ही नहीं, भौगोलिक दृष्टिकोण से भी भिन्न-भिन्न किस्म के अनेक प्रदेश और उनके अपने जलवायु हैं। यह प्रसार इतना विशाल है कि मानव की सीमित बुद्धि इस प्रसार को देखने व समझने में असमर्थ है। इस ब्रह्मांड में अनेक सूर्य-मंडल, धरतियां, पाताल और आकाश हैं। इस अनगिनत प्रसार को श्री गुरु नानक देव जी ने 'जपु' बाणी में 'ज्ञान खंड' के विश्लेषण का हिस्सा बनाया है, जिसका ज्ञान प्राप्त करना मानवीय बौद्धिक ज्ञान के वश में नहीं। ऐसा ज्ञान केवल अनुभव के माध्यम से उस व्यक्ति को प्राप्त होता है, जिस पर अकाल पुरख की कृपा होती है। इस अवस्था में पहुँचे जिज्ञासु को परमात्मा की भांति-भांति रचना के दर्शन होते हैं :

केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ।।. . .
केतीआ सुरती सेवक
केते नानक अंतु न अंतु ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७)

दरअसल यह धरती तो ब्रह्मांड की विशालता के संदर्भ में एक छोटा-सा बिंदु है। यह अंदाज़ा सहज ही लगाया जा सकता है कि इस छोटे-से बिंदु पर रह रहे उससे भी कहीं छोटे मानव की शक्तियां कितनी हो सकती हैं! वास्तव में विस्मयकारी व्यक्ति ही सही अर्थों में ज्ञानवान व्यक्ति होता है, क्योंकि वह भौतिक ज्ञान की प्राप्ति के अहं को छोड़ कर 'कुदरत' के विशाल नज़ारे को अपने अंदर अनुभव कर लेता है। श्री गुरु अरजन देव जी उन नेत्रों की तरफ संकेत करते हैं, जिनके माध्यम से प्रभु प्रियतम का दीदार होता है :

लोइण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी ।।
नानक से अखड़ीआं
बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५७७)

५. ब्रह्म-ज्ञान : ब्रह्म-ज्ञान से तात्पर्य ब्रह्म का बोध या ज्ञान प्राप्त करना है। 'ब्रह्म- ज्ञान' को श्री गुरु ग्रंथ साहब में 'सुगिआन', 'सहज ज्ञान', 'तत ज्ञान', 'गुरमति ज्ञान' और 'ज्ञान

अंजन' आदि नामों के साथ पेश किया गया है। रहस्यवाद (Mystriousness) के स्तर पर यह बहुत गंभीर विषय है। 'ब्रह्म-ज्ञान' की प्राप्ति वाले साधक को 'ब्रह्म-ज्ञानी' कहा जाता है।'ब्रह्म-ज्ञानी' परमेश्वर का रुतबा प्राप्त कर लेता है, क्योंकि उसे आत्मा का बोध हो जाता है। गुरु-वाक्य है— ''जिनि आतमु चीनिआ परमातमु सोई।। 'सर्वोच्च ज्ञान, उच्चतम सत्यता का ज्ञान है, जिसकी प्राप्ति मानव को ज्ञानवानता के उस स्तर पर ले जाती है, जहाँ वह 'ब्रह्म-ज्ञानी' के रूप में विचरण करता है। गुरबाणी में ज्ञानयुक्त आदर्श को 'ब्रह्म-ज्ञान' का नाम दिया है, जिससे ऊँची कोई अन्य अवस्था मानव के लिए सोची नहीं जा सकती। 'ब्रह्म-ज्ञानी' आत्मिक ज्ञान का अभिलाषी होता है। 'ब्रह्म- ज्ञान' का सीधा सम्बन्ध जिज्ञासु के अंतर-ज्ञान के साथ होता है। सुखमनी साहिब में इस अवस्था पर पहुँचे व्यक्ति को 'ब्रह्म-ज्ञानी' नाम से संबोधित किया गया है :

नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २७३)

सारांश के तौर पर कहा जा सकता है कि 'ज्ञान-मार्ग' धर्म-साधना का पवित्र और अविभाज्य अंग है। 'ज्ञान-मार्ग' का केंद्रीय बिन्दु 'ब्रह्म' है, जिसे जानने और मानने के लिए अनेक यत्न होते आए हैं, वे चाहे दार्शनिक स्तर पर हों या आध्यात्मिक स्तर पर। मानव का परम उद्देश्य परमात्मा की प्राप्ति है, जिसकी पूर्ति के लिए मानव यत्नशील रहता है। इन यत्नों पर जब ईश्वरीय-कृपा होती है तो परमात्मा हृदय घर में प्रकट हो जाता है, जिज्ञासु को आत्म-ज्ञान प्राप्त हो जाता है, जिससे उसका अंदरूनी संसार बदल जाता है। इस आत्म-ज्ञान को गुरबाणी में 'ब्रह्म-ज्ञान' की संज्ञा दी गई है। दूसरी तरफ़ अकाल पुरख से टूटे हुए लोग अज्ञानी हैं, जो इस संसार को सत्य जान कर, मोह-माया में फंस कर अपना जीवन व्यर्थ गंवा लेते हैं। पूर्ण गुरु की शरण में जाकर नाम-सिमरन के द्वारा मानव अज्ञान का विनाश कर सकता है। एक बात सुनिश्चित है कि अज्ञान के अंधेरे को ज्ञान के प्रकाश के बिना दूर नहीं किया जा सकता। बेशक इस 'ज्ञान' की व्याख्या दर्शन-शास्त्रियों और धर्म-शास्त्रियों ने अपने-अपने ढंग से की है, परंतु ज्ञान-प्राप्ति का पृथक रूप श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी के माध्यम से रूपमान होता है।

मति विचि रतन जवाहर माणिक . . .

*— डॉ. मनजीत कौर**

पावन गुरबाणी हमें समस्त वहमों-भ्रमों, कर्मकाण्डों एवं प्रपंचों से मुक्त कर केवल एक परम पिता परमात्मा के साथ जोड़ती है, लेकिन इस जुड़ाव हेतु पूर्ण सतिगुरु की मध्यस्थता अनिवार्य है। इस संदर्भ में श्री गुरु नानक देव जी की सिद्धों के साथ हुई गोष्ठी के दौरान गुरु जी से पूछे गए बहुत ही अहम प्रश्न और उनका तर्कपूर्ण उत्तर सिद्धों को निरुत्तर कर देता है। सिद्धों का सवाल था— "आपका गुरु कौन है और आप किसके शिष्य हो?" गुरु जी का पावन जवाब था— "पारब्रह्म परमेश्वर का शबद मेरा गुरु है और उसका ध्यान करके सुमिरन करने वाला अर्थात् उसमें चित्त जोड़ने वाला मैं उसका शिष्य हूँ।"

तेरा कवणु गुरू जिस का तू चेला ।। . . .
सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९४२)

चिन्तकों के चिन्तनानुसार 'गुरु' शब्द के अर्थ बहुत ही विस्मयकारी हैं। 'गु' अर्थात् 'अन्धकार', 'रु' अर्थात् 'प्रकाश'। अत: 'गुरु' वह महान शख्सियत है जो जीव को अज्ञानता के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर तथा नश्वरता से अमरता की ओर सहजता से ले जाता है।

लगभग समस्त धर्मों ने गुरु की महत्ता पर प्रकाश डाला है। ईश्वर सर्वव्यापी है। वह जर्रे-जर्रे में विद्यमान है, लेकिन उसकी सर्वव्यापकता का बोध गुरु द्वारा ही सम्भव हैं।

श्री गुरु अंगद देव जी का इस संदर्भ में पावन फरमान है :

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ।।
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४६३)

यही नहीं, गुरु के बिना अंधकार ही अंधकार है। जीवन-पथ की समझ गुरु बिना सम्भाव नहीं है :

गुर बिनु घोरु अंधारु
गुरू बिनु समझ न आवै ।।
गुर बिनु सुरति न सिधि
गुरू बिनु मुकति न पावै ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३९९)

गुरु-रूपी ज्ञान के बिना सर्वत्र अंधकार है। गुरु के बिना ज्ञान, विवेकशीलता सम्भव नहीं। असल में प्रभु की बंदगी गुरु के बिना मुमकिन नहीं है, क्योंकि जीव तो अल्पज्ञ है और अक्सर वह विकारों के दलदल में फंस जाता है। इसकी भटकना गुरु-शब्द के बिना नहीं मिट सकती। सिक्ख धर्म में गुरु की महत्ता बारम्बार दर्शायी

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर— ३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

गई है :

मत को भरमि भुलै संसारि ।।
गुर बिनु कोइ न उतरसि पारि ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८६४)

गुरु 'देह' को नहीं, 'ज्ञान' को माना गया है। सच्चा ज्ञान ईश्वर का ही रूप है। यह ईश्वरीय ज्ञान (शब्द) गुरु साहिबान, भक्त साहिबान आदि के अन्त:करण में प्रकट हुआ और उसका अस्तित्व गुरबाणी के रूप में, श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में रहती दुनिया तक स्थापित कर दिया गया :

बाणी गुरू गुरू है बाणी
विचि बाणी अंम्रितु सारे ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब पन्ना ९८२)

यही नहीं, शब्द को गुरु, पीर, गहर-गम्भीर मानते हुए बिना शब्द के जीव की अधोगति का वर्णन इस प्रकार किया गया है :

सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा
बिनु सबदै जगु बउरानं ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३५)

गुरबाणी में मन को प्रबोधित करते हुए समझाया गया है कि हे मेरे मन! ईश्वरीय ज्ञान से गहरी निकटता स्थापित कर अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान को अपना कर उसी के अनुसार आचरण कर, जिसके फलस्वरूप उसकी रहमत से सदैव स्थिर रहने वाले प्रभु का सच्चा सेवक बना जा सके।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने प्रभु-नाम की महिमा का गायन करते हुए फरमाया है कि अगर कोई प्राणी प्रभु-नाम का किनका-मात्र भी हृदय में बसा लेता है तो उसकी महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता। इस संदर्भ में आप जी का पावन फरमान है :

किनका एक जिसु जीअ बसावै ।।
ता की महिमा गनी न आवै ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २६२)

गागर में सागर भरने वाली श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी की एक-एक पंक्ति में इतने गहरे अर्थ एवं रहस्य समाहित हैं कि अगर कोई इसे पूर्ण श्रद्धा-भाव सहित पढ़े अथवा श्रवण करे तो वह गुरु-कृपा द्वारा मनन वाली अवस्था तक सहजता से पहुंच सकता है। जपु जी साहिब में गुरु पातशाह का पावन फरमान है :

मति विचि रतन जवाहर माणिक
जे इक गुर की सिख सुणी ।।
गुरा इक देहि बुझाई ।।
सभना जीआ का इकु दाता
सो मै विसरि न जाई ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २)

गुरु जी के पावन चिन्तनानुसार अगर सतिगुरु की शिक्षा तन्मयता से सुन ली जाए, तो मनुष्य की बुद्धि में रत्न, जवाहरात एवं अमूल्य (अनमोल) मोती उत्पन्न हो जाते हैं। गुरमति में 'रत्न' वैराग्य का, 'जवाहर' नाम एवं ज्ञान का तथा 'माणक' श्रवण एवं मनन का प्रतीक है। अत: गुरु की शिक्षा सुनने से, मनन करने से हृदय में परमात्मा के गुण पैदा हो जाते हैं।

ऐसी याचना करने वाले जीव की आत्मिक अवस्था कितनी ऊँची होगी, इसका अनुमान

सहज ही लगाया जा सकता है। बेशक जीव की बुद्धि में रत्न, जवाहर और माणक विद्यमान हैं लेकिन उनको प्रकट करने का सामर्थ्य पूर्ण गुरु में ही है। इस संदर्भ में अनेक प्रमाणिक साखियां सिक्ख इतिहास में मौजूद हैं। आओ आज एक ऐसे ही गुरसिक्ख के जीवन से प्रेरणा लेते हैं, जो परमहंस की पदवी को प्राप्त हुए। उनका नाम इतिहास में है—भाई पारो।

भाई पारो डल्ला गांव के निवासी थे। गुरु-घर के श्रद्धालु एवं निष्ठावान सिक्ख थे। आप जी का जीवन पूर्णतया गुरु आशयानुसार था। आप जी के उच्च आचरण एवं गुरु-भक्ति को देखते हुए गुरु-घर द्वारा आपको 'परमहंस' की पदवी प्राप्त हुई।

इतिहासकारों के अनुसार आप दृढ़ इरादे वाले पूर्ण गुरसिक्ख थे। आप घुड़सवारी में भी निपुण थे। पक्के नितनेमी थे। गुरु-घर की हाजरी हर हाल, हर परिस्थिति में भरते थे। गुरु-घर के साथ ऐसा प्रेम कि बहते दरिया को घोड़े सहित पार कर जाते और गुरु-दर्शन हेतु गुरु-घर पहुंच जाते। संगत में भी आपका अति सम्मान था। एक बार आपने श्री गुरु अंगद देव जी से विनती की कि आप कृपा करो और दास को समझाओ कि परमहंस कैसे होते हैं।

श्री गुरु अंगद देव जी ने बड़े प्यार से कहा, ''आओ पारो! आज आपको हंस की वृत्ति बताते हैं! हंस सागर अथवा झीलों के आस-पास निवास करते हैं और सुच्चे मोती चुगते हैं। ईश्वर ने इन्हें ऐसी ताकत प्रदान की है कि ये दूध और पानी को अलग-अलग कर देते हैं। इनकी चोंच पर एक ऐसा रसायन लगा होता है कि दूध और पानी के मिश्रण में चोंच डालते ही दूध के छोटे-छोटे टुकड़े बन जाते हैं और पानी अलग हो जाता है। ऐसे में हंस दूध का सेवन सहजता से कर लेता है और पानी छोड़ देता है।''

''ठीक इसी प्रकार गुरु का शब्द हीरे-मोती है। जो जीव गुरु-शब्द को श्रवण कर मनन करता है, फिर उस अमृतमयी शब्द से जो ज्ञान प्राप्त करता है, वह ज्ञान हंस की चोंच सदृश्य है। जीव इस गुरु-शब्द-ज्ञान (ज्ञान-रसायन) से आत्मा और शरीर, अमरता एवं नश्वरता का भेद बाखूबी समझ लेता है अर्थात् दोनों को अलग करके समझ लेता है। इसी तरह हंस वृत्ति वाले गुरसिक्ख गुरमति और मनमति का भेद समझ लेते हैं। शरीर की नश्वरता एवं आत्मा की अमरता की पहचान के कारण शरीर को साधन-मात्र समझ कर परमात्मा के गुणों को आत्मसात करते हैं तथा विकारों से मुक्त हो जाते हैं। वे सर्वोत्तम जीवन-यापन करते हुए गुरु-शब्द की कमाई से आत्मिक आनंद की अनुभूति हर पल करते हैं।''

इस प्रकार गुरु जी से शिक्षा प्राप्त कर भाई पारो परमहंस की पदवी को प्राप्त हुए तथा अपने परिवार सहित अन्य लोगों को भी सिक्खी मार्ग का अनुगामी बनाया।

श्री गुरु नानक पातशाह ने चार उदासियां (धर्म प्रचार-यात्राएं) कर 'संगत' स्थापित की, निर्मल पंथ की नींव रखी, निर्मल सिद्धांतों से मानवता को एक ईश्वर के साथ जोड़ा,

समस्त वहमों-भ्रमों, कर्मकांडों, आडम्बरों से तथा जात-पांत, ऊँच-नीच के बंधनों से मुक्त करवाया, समतावादी, न्यायपूर्ण समाज की स्थापना हेतु दार्शनिक विचारधारा को कर्म के साथ जोड़ कर, सामाजिक अन्याय को समाप्त कर आदर्श समाज की कल्पना को आत्मज्ञान से साकार किया, लंगर-प्रथा (सामूहिक भोजन) की प्रथा चलाई। दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी ने इस मर्यादा को और मजबूत किया। तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी के गुरमति प्रचार मिशन हेतु २२ मंजियां तथा ५२ पीढ़े (प्रचार तथा उप-प्रचार केन्द्र) समूचे देश में स्थापित किए। विविध नगरों में उच्च करनी वाले, पूर्ण गुरमति के धारक, सिक्खी के ज्ञान से भरपूर जत्थेबंद ढंग से सिक्खी का प्रचार करने वाले प्रचारक नियुक्त किए। उनमें से एक प्रचारक भाई पारो को भी नियुक्त किया गया, जिनके नेक जीवन से प्रभावित हुए लोग इनकी संगत में आने के बाद हमेशा के लिए गुरु-घर के मुरीद हो गए। केवल हिंदू ही नहीं, अपितु मुसलमान भी गुरु-घर के साथ जुड़ गए। भाई अल्लायार खान, जो कि पठान था और घोड़ों का व्यापार करता था, भाई पारो के व्यक्तित्व से इतना प्रभावित हुआ कि वह श्री गुरु अमरदास जी के दरबार में गोइंदवाल साहिब जा पहुंचा तथा सिक्खी धारण की। श्री गुरु अमरदास जी ने उन्हें भी मंजीदार (प्रचारक) स्थापित कर दिया। इनकी बदौलत अनेक मुसलमान सिक्खी में शामिल हुए।

इस प्रकार जिस किसी जीव के अन्त:करण में गुरु-शब्द का प्रकाश हुआ, अज्ञानता का अंधकार स्वत: ही हमेशा के लिए दूर हो गया। ईश्वर-प्रदत्त जीव की बुद्धि में पहले से ही मौजूद रत्न, जवाहर, माणक आदि अनमोल खजाना गुरु-कृपा से उजागर हो गया। गुरबाणी में गुरु को पारस और जीव को लोहा कहा गया है, जो गुरु-शब्द का स्पर्श पाकर स्वर्णिम रूप धारण करता है। यही नहीं, गुरु-पारस की एक अन्य विलक्षणता है कि वह अपने स्पर्श से ज्ञान का प्रकाश कर जीव को पारस रूप बना देता है। बशर्ते गुरु की शिक्षा पर मन-वचन-कर्म से कोई अमल कर ले, प्रभु-नाम-अमृत का रसिया बन जाए। ऐसे ही जीवों का जीवन धन्य है। वे केवल जग में आकर अपना उद्धार नहीं करते, अपितु कितने ही संगी-साथियों को भवसागर से पार उतारने के योग्य हो जाते हैं।

यह प्रताप धुर की बाणी का है, जो समस्त चिन्ताओं और संतापों से मुक्त करवाने वाली है :

— धुर की बाणी आई ।।
तिनि सगली चिंत मिटाई ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६२८)

— गुरु बाणी कहै सेवकु जनु
मानै परतखि गुरू निसतारे ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९८२)

अमृतमयी गुरु के मुख से उच्चरित हुई बाणी ही प्रत्यक्ष गुरु है और इसी से दिशा-निर्देश लेकर संसार रूपी भवसागर से पार उतरा जा सकता है। सर्वकला समर्थ पारब्रहम

परमेश्वर की अपार कृपा से सच्चा गुरु मिलता है :

पूरै भागि सतिगुरु पाईऐ
जे हरि प्रभु बखस करेइ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८५१)

पूर्ण गुरु की प्राप्ति से ही जीवन के समस्त दायित्वों का सुचारू रूप से निर्वाह करता हुआ जीव हंसते-खेलते, खाते-पीते सही जीवन-युक्ति से सहज ही मुक्तावस्था पा लेता है। पंचम पातशाह का इस संदर्भ में पावन फरमान है :

नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ।।
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ
खावंदिआ विचे होवै मुकति ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५२२)

समर्थ गुरु की महिमा अकथनीय है। वह साक्षात प्रभु का ही रूप है :

महिमा कही न जाइ गुर समरथ देव ।।
गुर पारब्रहम परमेसुर
अपरंपर अलख अभेव ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५२२)

कविता

फिर जो भी होगा, भला करेगा वो!

फिक्र अगर तुम करते रहे तो,
जिक्र न कर पाओगे !
यकीन जानो उसके जिक्र बिन,
फिक्र में ही मर जाओगे !
जिक्र अगर उसका करोगे,
फिक्र करेगा तुम्हारी वो !
फिर जो भी होगा, भला करेगा वो !
चिंता अगर करते रहे तो,
चिन्तन न कर पाओगे !
यकीन जानो जीते-जी,
सुलगते रह जाओगे !
चिन्तन करो बस तुम उसका,
चिन्ता तुम्हारी करेगा वो !
फिर जो भी होगा, भला करेगा वो !
चोंच दी है जिस मालिक ने,
चुगा भी तो देगा वो !
लेकिन पेटियां भरने का,
ठेका नहीं लेगा वो !
जो मिला है सब्र करो,
सबकी खबर रखता है वो !
फिर जो भी होगा,
भला करेगा वो !

१५ अगस्त, १९४७ ई.— आज़ादी की सुबह

*– स. गुरचरनजीत सिंघ (लांबा)**

"खुश हुआ था तोड़ कर
अपने क़फ़स की तीलियां,
हाय कह कर रह गया,
टूटे परों को देख कर।"

मार्च १९४७— 'मुस्लिम लीग' और 'हिंदू कांग्रेस' की संयुक्त कुटिल नीति द्वारा भारत की आज़ादी के नाम तले 'गुरां दे नाम' पर जी रहे पंजाब को सदा के लिए पाकिस्तान की ग़ुलामी के अधीन कर देने के अमल को अंतिम रूप दिया जा रहा था। 'लीग' की माँग की विरोधता के कारण सिक्ख घल्लूघारा (नसलकुशी) के अज़ाब को झेल रहे थे। पंजाब में यूनियनिस्ट मंत्रालय इस्तीफ़ा दे चुका था। मुस्लिम लीग की सरकार आसीन होने के प्रबंध मुकम्मल हो चुके थे। राष्ट्रीय एकता के कर्णधार, भारतवर्ष के बड़े नेताओं-नेहरू-गांधी की भारत की आज़ादी हासिल करने की तत्परता ने पंजाब और सिक्खों के साथ किये सभी वायदे दरकिनार करते हुए पूरे पंजाब को ही भारत की बजाय पाकिस्तान के अधीन एक राज्य होना तसलीम कर लिया। गांधी वगरह यह भूल चुके थे कि भारत के टुकड़े होने की तुलना वे 'गाय के टुकड़े' होने के साथ कर चुके थे।

मुस्लिम लीग के कार्यकर्ता— 'मांग कर लिया है पाकिस्तान, लड़ कर लेंगे हिंदुस्तान' के नारों द्वारा अंग्रेज़ों और हिंदुओं की ग़ुलामी के अंत का ख़ैरमखदूम कर रहे थे। कांग्रेस के पंजाब तथा बंगाल के क्रांतिकारियों की महान कुर्बानियों और इन दोनों राज्यों के पाकिस्तान में जाने की तलख़ सच्चाई से मुँह मोड़ कर— "दे दी हमें आज़ादी बिना खडग, बिना ढाल। साबरमती के संत, तूने कर दिया कमाल।" का राग आलाप रहे थे।

और कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। सिक्खों के लिए ख़ास तौर पर यह काल-कूक का चीत्कार था। यह हिंदुस्तान का बँटवारा नहीं, बल्कि सिक्खों का बँटवारा था। इसके साथ मुल्क के ही नहीं, बल्कि सिक्खों के टुकड़े हो रहे थे। पंजाब पूरे का पूरा पाकिस्तान का हिस्सा बनने जा रहा था। आज़ादी के इस सृजित प्रबंध द्वारा दो तिहाई सिक्ख पाकिस्तान में और एक तिहाई हिंदुस्तान में रह जाने थे। इसके साथ ही राष्ट्रीय लीडरशिप आबादी के

**New Jersey USA, M. +1 973 699 0950, E-Mail :- Santsipahi@Gmail.com*

नियमबद्ध परिवर्तन के प्रबंध की माँग को भी पूरी तरह से नजरअन्दाज कर चुकी थी। पंजाब का प्रत्येक हिंदू-सिक्ख नेता गंभीर रूप से इस खतरे के प्रति चिंतित था और इस हालत में सामूहिक रूप से सभी ने शिरोमणि अकाली दल और इसके नेता मास्टर तारा सिंघ को अपना वाहिद नेता तसलीम कर लिया था।

फिर वो ऐतिहासिक घटना घटी जब ३ मार्च, १९४७ ई. को मास्टर तारा सिंघ ने लाहौर किले के सामने हाथ में पकड़ी श्रीसाहिब (कृपाण) को ऊँचा उठा कर 'पाकिस्तान मुर्दाबाद' का नारा लगाया। मास्टर तारा सिंघ के इस अद्वितीय साहसपूर्ण कदम से मुस्लिम लीग की वज़ारत बनते-बनते रह गई और पंजाब तथा बंगाल के बँटवारे की बात आरंभ हो गई। मुस्लिम लीग के लिए यह असह्य था और इसकी क्षति पंजाब तथा बंगाल को झेलनी पड़ी। पूरबी पंजाब और पश्चिमी बंगाल के ये हिस्से हिंदुस्तान में शामिल होना दरअसल सिक्खों और शिरोमणि अकाली दल की भारतवर्ष को देन है। इस ऐतिहासिक तथ्य और सिक्ख शौर्यगाथा को भारत सरकार, सभी राजनीतिक पार्टियों एवं देशवासियों ने पूरी तरह से अनदेखा किया है।

इसके साथ ही भविष्य में वोटों की राजनीति के साथ चुनी जाने वाली सरकार और ढांचे की बनावट की विचारधारा ने सिक्खों जैसी अल्पसंख्यक कौम को चिंतातुर कर दिया। मास्टर तारा सिंघ ने भविष्य की गतिविधियों को महसूस करते लिखा कि अंग्रेज़ जा रहे हैं, मगर मुझे डर लग रहा है। आज से पहले कोई सिक्ख जितना मर्ज़ी सरकार-समर्थक हो जाता, परन्तु अंग्रेज़ नहीं बन सकता था, लेकिन अब आने वाले समय में सत्ताधारी कौम की श्रेणी में शामिल होने के लिए केवल पाँच मिनट का समय लगेगा। पतितपुन के मुख्य कारण की यह कितनी तलख़ सच्चाई बन गई है।

यह घटनाक्रम यहीं पर नहीं रूका, बल्कि पश्चिमी पंजाब में हिंदू-सिक्खों के कत्ल-ए-आम को रोकने की बात को दरकिनार करते हुए उल्टा सरकारी रेडियो से गांधी के सिक्ख- विरोधी विचारों का प्रसारण व सिक्खों को सरकारी तौर पर 'जरायमपेशा' तक एलान कर दिया गया। हक और इंसाफ़ की आवाज़ को बंद करने के लिए आज़ाद हिंदुस्तान में मास्टर तारा सिंघ को ही कैद कर लिया गया। उस समय की कुटल नीति और राष्ट्रीय नेताओं की सिक्ख विरोधी विचारधारा को जगज़ाहिर करते दस्तावेज़ अब सरकारी तौर पर प्रकट हो चुके हैं। इनमें महात्मा गांधी ने जो कुछ कहा और लिखा उसकी ९५ जिल्दें, पंडित जवाहर लाल नेहरू की

तकरीबन ७५ और सरदार पटेल की खतोखिताबत की १० जिल्दें शामिल हैं। इनमें सरदार पटेल और पंडित नेहरू के दरमियान हुए पत्र-व्यवहार से स्पष्ट होता है कि कैसे शिरोमणि अकाली दल और मास्टर तारा सिंघ को कमज़ोर एवं निरस्त करने के लिए, उनके मुकाबले में सरकारी नेता उभारने की कोशिश और इसके लिए अकाली नामज़द सरदार बलदेव सिंघ द्वारा नेहरू-पटेल को अपनी सेवा की पेशकश की गई थी।

"नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु।।" कह कर श्री गुरु नानक देव जी ने आत्मा के मंज़िल-ए-मकसूद तक पहुँचने के लिए शरीर और आत्मा के सुमेल का पैग़ाम दिया। सतिगुरु सच्चे पातशाह ने मुगलों की ग़ुलामी कर रहे ब्राह्मण के हवाले से धार्मिक ग़ुलामी के राजनीतिक ग़ुलामी में तबदील होने के कारण को चित्रित किया है :

गऊ बिराहमण कउ करु लावहु
गोबरि तरणु न जाई।।
धोती टिका तै जपमाली
धानु मलेछां खाई।।
अंतरि पूजा पड़हि कतेबा
संजमु तुरका भाई।।
छोडीले पाखंडा।।
नामि लइऐ जाहि तरंदा।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७१)

इसके साथ गुरु साहिब ने आने वाले समय में सिक्ख इतिहास के प्रसार की योजना और मीरी-पीरी के संकल्प को उजागर किया। सिक्ख अपनी ज़िंदगी और जीवन-जाच को अलग-अलग डिब्बों में बंद कर नहीं जी सकता। धार्मिक आज़ादी के बिना राजनीतिक आज़ादी और राजनीतिक आज़ादी के बिना धार्मिक आज़ादी बेमानी है, इसलिए "जे जीवै पति लथी जाइ।। सभु हरामु जेता किछु खाइ।।" के गुरु-वाक्य से शिक्षा लेते हुए सिक्ख धार्मिक ग़ुलामी से निजात पाने के लिए मुगलों, दुर्रानियों, अफगानों, राजपूत मुसलमानों, फ़िरंगियों की राजनीतिक ग़ुलामी के विरुद्ध लामबद्ध हुए। इसी लिए गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के दौरान धार्मिक आज़ादी की जद्दोजहद को महात्मा गांधी ने सही ठहराते हुए देश की आज़ादी की पहली बड़ी जीत करार दिया। सिक्ख के लिए देश की आज़ादी की जंग भी धर्म-युद्ध ही थी।

देश की आज़ादी की जद्दोजहद के दौरान गुरु-पंथ और पंथक हितों की सुरक्षा का प्रतिनिधित्व करने के लिए केवल सिक्खों की नुमाइंदा जमात 'शिरोमणि अकाली दल' था। अब देश तो आज़ाद हो गया है, मगर क्या पंथ आज़ाद है? शायर-ए-मशरक अलामा इकबाल की कलम से तीव्र हूक निकली थी :

मुल्लां को जो है मस्जिद में जाने की

इजाज़त,

नादां यह समझता है कि इसलाम है आज़ाद।

प्रतीत होता है कि यह जग-बीती नहीं, बल्कि हमारी आप-बीती गाथा है। क्या १५ अगस्त, १९४७ ई. की आज़ादी ने गुरु-पंथ को सदा के लिए जकड़ दिया है? संवैधानिक और कानूनी तौर पर सिक्ख हिंदुओं का एक हिस्सा हैं। विवाह, विरासत तथा अन्य कानून अब हिंदू कानून के अधीन हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अस्तित्व को गंभीर कानूनी और प्रशासनिक खतरों से दो-चार होना पड़ रहा है।

'यूनीफ़ॉर्म सिविल कोड' के नाम पर सिक्खों के अलग और न्यारे वजूद को गंभीर चुनौती पेश है। लागू किये जा रहे इस नये कानून के माध्यम से पंथ के अजीम संघर्ष और जद्दोजहद से प्राप्त हुए आधे-अधूरे 'अनंद मैरिज एक्ट' का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। इसके साथ ही धारा-२५ में सरकार द्वारा गठित वेंकटाचल्या कमिशन द्वारा सिफारिश किए गए संशोधन पूरी तरह से निरस्त हो जाएंगे। इस तरह देश के बँटवारे के साथ आरंभ हुई सिक्ख धर्म को कानूनी मान्यता देने की माँग पूरी तरह से समाप्त हो जाएगी। खतरे की समझ आ जाने से ख़तरा समाप्त हो जाता है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा इस बारे में दी गई चेतावनी और उठाए गए कदम उल्लेखनीय हैं, यदि इन्हें संजीदगी के साथ अंजाम तक पहुँचाया जा सके।

पंथ की अनगिनत कुर्बानियों द्वारा गठित की गई शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के टुकड़े किये जा रहे हैं। और तो और, सभी नियमों-वादों को तिलांजलि देकर गुरुद्वारा एक्ट को ही समाप्त करने की चालें चली जा रही हैं। अंग्रेज़ शासन के दौरान फ़ौज में सिक्ख फौजियों के लिए सिक्खी स्वरूप लाज़िमी था, मगर अब तो सिक्ख रेजिमेंट में भी केशों की संभाल लाज़िमी नहीं लगती। अकाली दल द्वारा पारित प्रस्तावों के माध्यम से सिक्ख फौजियों की रहित (आचरणावली) की तर्ज़ पर पुलिस के लिए भी यह माँग की जाती रही है। इसके विपरीत किसी एकाध पुलिस कर्मचारी का साबत सूरत नज़र आना हालात की गंभीरता को बयान करता है। ये धार्मिक और मानसिक ग़ुलामी के चिह्न हैं। ये मुद्दे अब हाशिए पर चले गए लगते हैं। अपना सब कुछ कुर्बान कर देश को आज़ाद करवाने वाली कौम आज अपने आप को ठगा महसूस कर रही है। ग़ुलाम हो जाने की अपेक्षा ग़ुलामी तसलीम कर लेनी आत्मघाती होता है। अब तो *"बंदि खलासी भाणै होइ ।।"* के गुरु-वाक्य के अनुसार फ़रियाद गुरु परमेश्वर के समक्ष है!

कविता

महान सिक्ख लेखक : महाकवि भाई संतोख सिंघ

-स. करनैल सिंघ सरदार पंछी*

काबिले[१] सद सजदा रेज़ी[२] कामरां[३] संतोख सिंघ!
सहराए[४] तारीख़[५] में इक सारबां[६] संतोख सिंघ!
प्यारे वालिद[७] देवा सिंघ माई रजादी वालिदा[८],
जाए[९] पैदायश है नूर दी सरां संतोख सिंघ!
हरिमंदर साहिब के ग्रंथी ज्ञानी संत सिंघ,
जिनसे पढ़कर हो गए आलिम-जुबां[१०] संतोख सिंघ!
बिखरे सिक्ख इतिहास के सब मोती यकजा[११] कर दिए,
यूँ सजाए, हो गए वे कहकशां[१२] संतोख सिंघ!
'ग्रंथ गुर प्रताप सूरज' लिखा इस अंदाज में,
तीरगी[१३] में बन गया इक शम्मअ-दां[१४] संतोख सिंघ!
गुरु अंगद देव जी से गुरु गोबिंद सिंघ जी तलक,
दे दिया सबका तआरुफ[१५] खुशबयां संतोख सिंघ!
आ गया इस अदबी दुनिया में नया इक नाम कोश,
जिससे आलम में हुआ चिट्ठी रसां[१६] संतोख सिंघ!
गुर्ब गंजी, बाल्मीकि रामायण, आत्म पुराण,
और सिंहहर्फी पंजाबी, जानेजाँ[१७] संतोख सिंघ!
मेज़बाँ[१८] जब तक रहे भगवान सिंघ धूरियां,
लंबे अर्से तक थे उनके मेहमाँ[१९] संतोख सिंघ!
करम सिंघ महाराजा पटियाला थे इनके मुरीद,
वे वहीं पर बैठते थे, हों जहाँ संतोख सिंघ!
उैद सिंघ कैथल के राजा शायरी पर थे फिदा[२०],
कर दिए मसरूर[२१] यूं जादू-बयां[२२] संतोख सिंघ!
इस ज़मीं पर जो हकीकत[२३] बेवजह खामोश थी,
हो गए ये उसके गोया[२४] तरजुमा[२५] संतोख सिंघ!
लफ़्ज़े मौजूं[२६] की नाशिस्तें[२७] आपने की बार-बार,
इसलिए ही है मुकम्मल दास्तां[२८] संतोख सिंघ!
खूबरू[२९] अल्फाज़[३०] का बख्शा तख़इयुल[३१] को लिबास[३२],
यूं हूए खुद अपने पर भी मेहरबां संतोख सिंघ!
इल्मो-फन[३३] की कोई भी सरहद न बनने दी कभी,
इक ख्याले ख़ुशनुमा था बेकरां[३४] संतोख सिंघ!

*जेठी नगर, मालेर कोटला रोड, खन्ना (जिला लुधियाना)— १४१४०१, पंजाब, फोन : ९४१७०-९१६६८

इस्तआरे[३५] और कनाये[३६] मालूमाते तशबीहात[३७]
है अरूज़ी[३८] .फ़न का भी इक आस्तां[३९] संतोख सिंघ!
कश्तीए तशरीह[४०] सिक्ख इतिहास थी गिरदाब[४१] में,
आई साहिल[४२] पर बने जब बादबां[४३] संतोख सिंघ!
लिख के नौ गुरुओं का जीवन फलसफा मनज़ूम[४४] तर,
हो गये हर दिल की धड़कन शादमां[४५] संतोख सिंघ!
सात जन्मों की तपिश इक पल में गायब हो गई,
दिल के जिस आंगन गया अब्रे-रवां[४६] संतोख सिंघ!
हर कलम अब उस कलम को करता है .फ़र्शी सलाम,
जिम कलम ने कर दिया .फ़ख़्रे-ज़मां[४७] संतोख सिंघ!
शायरी उनकी रवां है आबशारों[४८] की तरह,
जिसमें चलता जाए है आबे-रवां [४९] संतोख सिंघ!
हर तरह की गुमराही को भी किनारे कर दिया,
खुद जरस [५०] थे और मीरे कारवां [५१] संतोख सिंघ!
होगा महवे गुफ़्तगू[५२] हर फूल से, तितली से भी,
मिल गया 'पंछी' को भी वह गुलिस्ताँ[५३] संतोख सिंघ!

१. काबिले = योग्य, २. सद सजदा रेज़ी = सौ बार नमन, ३. कामरां = भाग्यशाली, ४. सहरा = मरुस्थल, ५. तारीख़ =इतिहास, ६. सारबां = ऊंट चलाने वाला, ७. वालिद = पिताश्री, ८. वालिदा = माताश्री, ९. जाए = स्थान, १०. आलिम-जबां = विद्वान वक्ता, ११. यकजा = इकट्ठे, १२. कहकशां = आकाश गंगा, १३. तीरगी = अंधेरा, १४. शम्मअ-दां = मोमबत्तियों से बनाया गया उजाला प्रमुख, १५. तआरुफ = जान-पहचान, १६. चिट्ठी-रसाँ = डाकिया, १७. जानेजां = प्रिय, १८. मेज़बां = मेहमान- सेवक, १९.मेहमां = अतिथि, २०. फ़िदा = कुर्बान, २१. मसरूर = मस्त, २२. जादू-बयां = तेज़तरार बोलने वाला, २३.हकीकत = वास्तविकता, २४.गोया = बोलने वाला, २५. तरजुमा = भाषांतर, २६. लफ़्ज़े-मौज़ूं = उचित शब्द, २७. नशिस्तें = बैठकें, २८.दास्तां = कथा, २९. खूबरू = सुंदर, ३०.अल्फाज़ = शब्द, ३१.तख़इयुल = कल्पना, ३२. लिबास = वस्त्र, ३३.इल्मो-.फ़न = ज्ञान तथा कला, ३४. बेकरां = असीम, ३५. इस्तआरे = मांग लेना, ३६.कनाये = इशारे, ३७. मालूमाते तश्बीहात = उपमायों के बारे में जानकारी, ३८. अरूज़ी = छंदबद्धता विज्ञान, ३९. आस्तां = घर, ठिकाना, ४०. तशरीह = बाखूबी बयान करना, ४१. गिरदाब = भंवर, ४२. साहिल = किनारा, ४३. बादबां = कश्ती को हवा से चलाने वाला कपड़ा, ४४. मनजूम = काव्य रूप, ४५. शादमां = प्रसन्न, ४६.अब्रे-रवां =चलता-फिरता बादल, ४७. .फ़ख़्रे-ज़मां = इस युग का गौरव, ४८. आबशारों = झरनों, ४९. आबे-रवां = चलता हुआ पानी, ५०. जरस =घण्टा, ५१. मीरे कारवां = मानवीय समूह का अगुआ, ५२.महवे गुफ्तगू =आपसी बातचीत में संलग्न, ५३. गुलिस्ताँ = बाग।

ख़बरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कॉलेजों से कंपनियों ने किया ३०० विद्यार्थियों का चयन

श्री अमृतसर साहिब/चंडीगढ़ : १ जुलाई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा संचालित कॉलेजों के विद्यार्थियों को रोज़गार के अवसर प्रदान करने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा रोज़गार मेले का आयोजन किया गया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का यह पहला रोज़गार मेला था, जो विद्यार्थियों के लिए नौकरी प्राप्त करने का सुनहरी अवसर बना। चंडीगढ़ स्थित गुरुद्वारा श्री कलगीधर निवास सेक्टर २७ में आयोजित इस रोज़गार मेले में भारत की प्रसिद्ध लगभग २५ कंपनियों ने भाग लिया और ३०० के करीब विद्यार्थियों को रोज़गार के अवसर प्रदान किये गए। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की सदस्या बीबी हरजिंदर कौर, सचिव (शिक्षा) इंजीनियर सुखमिंदर सिंघ सहित कई शख़्सियतें उपस्थित रहीं।

इस सम्बंध में जानकारी देते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव (शिक्षा) इंजीनियर सुखमिंदर सिंघ ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी के नेतृत्व में डायरेक्टोरेट ऑफ एजूकेशन द्वारा जहाँ धार्मिक, सामाजिक और शैक्षिक गतिविधियों में बहुमूल्य योगदान दिया जा रहा है, वहीं धार्मिक परीक्षा, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, अंतरराष्ट्रीय कान्फ्रेंस करवा कर उल्लेखनीय कार्य किये हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा विद्यार्थियों को यूपीएससी, पीपीएससी जैसी प्रतियोगिता परीक्षायों की तैयारी नि:शुल्क करवाने का भी प्रबंध किया गया है।

उन्होंने कहा कि अब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी के निर्देशानुसार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को रोज़गार के अवसर प्रदान करने के लिए भारत की नामवर कंपनियों के साथ संपर्क स्थापित कर यह रोज़गार मेला आयोजित किया गया है, जिसमें देश भर से करीब २५ कंपनियों के नुमायंदे शामिल हुए। इस मेले में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के विभिन्न कॉलेजों के करीब ६०० विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें से ३०० के करीब विद्यार्थियों को विभिन्न कंपनियों की तरफ से रोज़गार के लिए चुना गया। इस रोज़गार मेले के प्रति विद्यार्थियों में भारी उत्साह देखने को मिला। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शैक्षिक अदारों का उद्देश्य केवल व्यावसायिक और अकादमिक

शिक्षा देना ही नहीं है, बल्कि रोज़गार के लिए उचित अवसर प्रदान करना भी है। इसके साथ ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व-निर्माण के लिए नैतिक शिक्षा के साथ जोड़ कर देश के अच्छे नागरिक बनाना भी है।

एडवोकेट धामी ने बरतानिया में संसदीय चुनाव के दौरान जीत हासिल करने वाले सिक्ख और पंजाबी सांसदों को दी बधाई

श्री अमृतसर साहिब : ६ जुलाई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने बरतानिया में हुए संसदीय चुनाव के दौरान जीत हासिल करने वाले सिक्ख और पंजाबी सांसदों को बधाई देते हुए कहा कि यह पंजाबियों और ख़ास कर सिक्खों के लिए बड़े गर्व की बात है।

एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि सिक्खों ने अपनी मेहनत और लियाकत के बल पर पूरी दुनिया में नाम कमाया है। दुनिया के विभिन्न देशों में राजनीतिक क्षेत्र में भी सिक्खों ने बड़ी प्राप्तिया की हैं। उन्होंने कहा कि यह पहली बार हुआ है कि बरतानिया की धरती पर इतनी बड़ी संख्यां में सिक्खों और पंजाबियों ने जीत हासिल की है। एडवोकेट धामी ने सिक्खों की तरक्की और चढ़दी कला (खुशहाली) के लिए परमात्मा के समक्ष अरदास करने के साथ-साथ आशा प्रकट की कि विदेशों में बसते सिक्खों के मसलों के हल के लिए नये चुने सांसद पहलकदमी करते हुए हरसंभव कोशिश करेंगे।

हरियाणा की भाजपा सरकार द्वारा अमुपुर गाँव के बर्बाद सिक्ख परिवारों तक पहुँची शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी

श्री अमृतसर साहिब / करनाल : ९ जुलाई : हरियाणा की भारतीय जनता पार्टी सरकार द्वारा करनाल ज़िले के अमुपुर गाँव में देश के बँटवारे के समय पश्चिमी पंजाब से उजड़ कर हरियाणा में आकर बसे चार सिक्ख परिवारों के घर तोड़ने की कार्यवाही का नोटिस लेते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के एक शिष्टमंडल ने वहाँ पहुंच कर पीड़ित परिवारों के साथ मुलाकात की और उनका साथ देने की वचनबद्धता प्रकट की।

मामले की संजीदगी को देखते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने एक कमेटी गठित की थी, जिसमें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सरदार हरभजन सिंघ मसाणा, कनिष्ठ उपाध्यक्ष सरदार गुरबखश सिंघ ख़ालसा, सदस्य भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल) और धर्म प्रचार कमेटी के सदस्य सरदार तेजिंदरपाल सिंघ लाडवां शामिल हैं।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के इस शिष्टमंडल ने आज पीड़ित परिवारों के साथ मुलाकात कर ज़मीनी स्तर की सारी स्थिति के बारे में जानकारी हासिल की। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल ने पीड़ित परिवारों को भरोसा दिया कि सिक्ख संस्था उनके साथ है और सरकारी धक्केशाही एवं जब्र का डटकर विरोध किया जायेगा। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने पीड़ित चार सिक्ख परिवारों को मूलभूत तौर पर एक - एक लाख रुपए की सहायता देने का एलान किया और हरियाणा की भाजपा सरकार के शासन-काल में हुई इस अमानवीय कार्यवाही की कड़ी निंदा करते हुए सरकार को इन परिवारों के साथ इंसाफ़ करने के लिए कहा।

इस अवसर पर मीडिया के साथ बातचीत करते हुए शिष्टमंडल का नेतृत्व कर रहे सरदार हरभजन सिंघ मसाणा ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी के आदेशानुसार चारों सिक्ख परिवारों को मूलभूत तौर पर एक-एक लाख रुपए की सहायता देने का फ़ैसला किया गया है। उन्होंने कहा कि सिक्ख संस्था इन सिक्ख परिवारों का हर स्तर पर सहयोग करेगी और भविष्य में भी इन्हें ज़रूरत के अनुसार हर तरह की सहायता प्रदान की जायेगी। उन्होंने भाजपा सरकार के शासन-काल में सिक्खों के विरुद्ध की गई इस कार्यवाही के विरोध में मानवाधिकारों से सम्बन्धित संस्थाओं और कार्यकर्ताओं को भी आवाज़ उठाने की अपील की। सरदार मसाणा ने समूची सिक्ख संस्थाओं और जत्थेबंदियों को इन परिवारों की अधिक से अधिक मदद करने की भी अपील की, ताकि दुख की इस घड़ी में इन्हें सहारा दिया जा सके।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल) ने हरियाणा की भाजपा सरकार की इस सिक्ख-विरोधी कार्यवाही की सख़्त निंदा करते हुए कहा कि सरकार की इस कार्यवाही से सिक्खों के मन में भारी आक्रोश है। इस कार्यवाही से भाजपा की सिक्ख विरोधी नीति एक बार फिर उजागर हुई है। उन्होंने कहा कि इस घटना की पूरी ज़िम्मेदारी हरियाणा सरकार की है और देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को देखना चाहिए कि उनकी पार्टी के नेतृत्व वाली हरियाणा सरकार राज्य में सिक्खों के साथ कैसे धक्केशाही कर रही है। भाई ग्रेवाल ने उन सिक्ख नेताओं से भी सवाल किया जो अपने आप में भाजपा के समर्थक कहलवाते हैं कि भाजपा सरकार के शासन-काल में सिक्खों के घर क्यों गिराए जा रहे हैं? हरियाणा सरकार द्वारा नामज़द हरियाणा गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, जिसका कार्यालय घटना-स्थल से कुछ दूरी पर ही कुरुक्षेत्र में स्थित है, के नुमायंदों की भी भाई ग्रेवाल ने कड़ी निंदा की और कहा कि वे लोग कई दिन बीत जाने के बाद भी अमुपुर में पीड़ित सिक्ख परिवारों से मिलने नहीं पहुँचे।

पीड़ित सिक्ख परिवारों में से स. बूटा सिंघ ने जानकारी देते हुए कहा कि वे चार भाई हैं और

उनका परिवार देश–विभाजन के पश्चात् पश्चिमी पंजाब से उजड़ कर अमुपुर गाँव की इस जगह पर पिछले ७० वर्ष से बसा हुआ है। २६ जून, २०२४ ई. को अचानक सरकार के अधिकारियों ने पुलिस बल के साथ मिलकर उनके चारों परिवारों के घर ढह–ढेरी कर दिए।

इस अवसर पर हरियाणा सिक्ख मिशन के इंचार्ज स. सुखविंदर संघ, गुरमति संगीत अकादमी शेखूपुरा करनाल के इंचार्ज स. प्रताप सिंघ, स. सुरिंदर सिंघ रामगढ़िया आदि उपस्थित थे।

भारत सरकार नये कानून केवल सिक्खों को निशाना बनाने के लिए न इस्तेमाल न करे : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : ९ जुलाई : राजस्थान के सिक्ख नेता और सिक्ख धर्म के प्रचार- प्रसार के लिए सक्रिय भाई तेजिंदरपाल सिंघ टिम्मा को नये कानूनों के अंतर्गत निशाने पर लेकर उनके विरुद्ध देशद्रोह का मुकद्दमा दर्ज करना देश में सिक्खों के विरुद्ध चली जा रही सरकारी चालों की तसवीर है, जिसकी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी कड़ी निंदा करती है। इन शब्दों का प्रकटावा करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि इस मामले में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी भाई तेजिंदरपाल सिंघ टिम्मा के साथ खड़ी है और उनकी हरसंभव मदद के लिए वचनबद्ध है। उन्होंने कहा कि भारत बहु–कौमी, बहु–धर्मी और बहु–भाषीय, बहु–सभ्याचारक देश है। यहाँ कानून भी सबके लिए एक समान होने चाहिए। अल्पसंख्यकों और खासकर सिक्खों को दबाने की सरकारी प्रवृत्ति देश–हित में नहीं है। उन्होंने कहा कि यदि बोलने की आज़ादी के लिए मापदंड अलग–अलग रखने हैं तो यह सबको कानूनन तौर पर मिले हक–हकूक केवल एक कागज़ी पुलंदा ही कहे जा सकते हैं।

एडवोकेट धामी ने कहा कि भारत सरकार नये कानून केवल सिक्खों को निशाना बनाने के लिए न इस्तेमाल करे, बल्कि सिक्खों के विरुद्ध उठ रही आवाज़ों और सोशल मीडिया पर किये जा रहे सिक्ख विरोधी नफ़रती प्रचार पर भी लागू करे। उन्होंने कहा कि सिक्खों के विरुद्ध साजिशन किये जाते विधिवत् नफ़रती प्रचार की निशानदेही कर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा कई सोशल मीडिया खातों की जानकारी पुलिस प्रशासन को लिखित रूप में भेजी जाने के बावजूद भी कोई कार्यवाही नहीं होती, परंतु सिक्खों के विरुद्ध एक आम शिकायत पर भी गंभीर धारायें दर्ज कर दी जाती हैं। यह देश में सभी धर्मों, वर्गों की एक समान सुनवाई वाला मापदंड नहीं है। उन्होंने कहा कि हम भाई तेजिंदरपाल सिंघ टिम्मा के साथ हैं और कानूनी लड़ाई में सहयोगी रहेंगे। उन्होंने राजस्थान की सरकार और पुलिस प्रशासन को भाई तेजिंदरपाल सिंघ के ख़िलाफ़ दर्ज किये गए मुकद्दमे को तुरंत रद्द करने के लिए भी कहा।

दाख़िला सूचना

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से

द्वि-वर्षीय सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स

पंजाबी, हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम में करवाया जा रहा है।

- इस कोर्स में गुरबाणी, सिक्ख इतिहास, सिक्ख सिद्धांत और सिक्ख रहित मर्यादा की जानकारी प्रदान की जाती है।
- दाख़िला लेने वाले अभ्यर्थी को कोर्स के पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री नि:शुल्क प्रदान की जाती है।
- इस कोर्स में प्रत्येक धर्म, प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित व्यक्ति, जिसकी आयु 16 वर्ष से अधिक हो, दाख़िला लेकर घर बैठे दो वर्ष में सिक्ख धर्म से संबंधित भरपूर जानकारी प्राप्त कर सकता है।
- कोर्स की दाख़िला फीस भारतीय नागरिकों के लिए मात्र 100/- (एक सौ) रुपए और विदेशी नागरिकों के लिए 30/- (तीस) अमेरिकन डॉलर या 20/- (बीस) पौंड (यू. के.) या भारतीय मुद्रा में 1500/- (एक हज़ार पाँच सौ) रुपए है। दाख़िला फीस सचिव, धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब के नाम बैंक ड्राफ्ट या ई-मनीआर्डर या नगद रूप में कार्यालय, धार्मिक परीक्षा विभाग में जमा करवाई जा सकती है। इस सम्बंध में धर्म प्रचार कमेटी के प्रचारक साहिबान या सिक्ख मिशन के इंचार्ज साहिबान के साथ भी संपर्क किया जा सकता है।
- कोर्स सम्पन्न होने पर प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले अभ्यर्थियों को क्रमश: 5100/-, 4100/- और 3100/- रुपए की राशि द्वारा सम्मानित किया जाता है तथा 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले अभ्यर्थियों को 1100/- रुपए प्रति अभ्यर्थी प्रदान कर सम्मानित किया जाता है।

पत्राचार के लिए पता :-

इंचार्ज, धार्मिक परीक्षा विभाग

धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब—१४३००१

फ़ोन : 0183-2553956-59, एक्स. 305, फैक्स : 0183-2553919

E-mail : religiousexam@gmail.com, website : sgpc.net

(समय :- प्रात: 9:30 बजे से सायं 4:30 बजे तक)

जारी-कर्ता :-

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी,

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

August 2024
DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

महाकवि भाई संतोख सिंघ

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh
Date : 7-8-2024